5 साल का सफर बेमिसाल...

दैनिक कारखाने का सफर

वर्ष 6, अंक 361 | भोपाल, शुक्रवार 12 जून, 2026 | ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष, द्वादशी 2083 | मूल्य 2 रुपए

भारतीय जहाजों पर हमले के बीच... पेज 5

शव को श्मशान ले जाते वक्त राम नाम... पेज 7

मप्र, गुजरात में भाजपा की निर्विरोध जीत, राजस्थान में कांग्रेस को एक

दैनिक कारखाने का सफर।
एजेंसी नई दिल्ली

भारतीय जनता पार्टी ने मध्य प्रदेश की तीनों राज्यसभा सीटें जीत ली हैं। पार्टी के उम्मीदवार रजनीश अग्रवाल, तरुण चुघ और महेश केवट 2026 के चुनावों में निर्विरोध चुने गए। तीनों उम्मीदवारों को विधानसभा से जीत का सर्टिफिकेट मिल गया है। यह घटनाक्रम कांग्रेस नेता मीनाक्षी नटराजन का नामांकन रद्द होने से जुड़े विवाद के बीच हुआ है। नटराजन ने गुरुवार को मध्य प्रदेश से राज्यसभा चुनाव के लिए अपना नामांकन रद्द किए जाने को चुनौती देते हुए सुप्रीम कोर्ट का रुख किया। इन तीन सीटों के लिए चुनाव 18 जून को होने थे। वहीं, गुजरात में राज्यसभा चुनावों को लेकर सबसे बड़ी और अहम खबर सामने आ रही है। राज्य में भारतीय जनता पार्टी (BJP) के सभी चार उम्मीदवार आधिकारिक तौर पर निर्विरोध चुन लिए गए हैं। नामांकन वापस लेने की समय-सीमा खत्म होते ही आज चुनाव अधिकारी ने इस बारे में आधिकारिक घोषणा कर दी है। चुनाव आयोग के नियमों के मुताबिक, आज सभी जीतने वाले उम्मीदवारों को निर्विरोध चुने जाने के विशेष प्रमाण-पत्र भी दिए गए। बीजेपी के ये चार वरिष्ठ नेता अब आने वाले दिनों में दिल्ली में संसद के उच्च सदन में गुजरात का मज़बूती से प्रतिनिधित्व करेंगे।
गुजरात विधानसभा भवन में नामांकन वापस लेने की प्रक्रिया पूरी होने के बाद, चुनाव प्रशासन ने आज आधिकारिक तौर पर नतीजों की घोषणा की। बीजेपी की ओर से राज्यसभा की इस अहम सीट के लिए चुनाव लड़ने वाले राजू शुक्ला, मानसिंह परमार, जितेंद्र कंजारिया और मुकेश राठवा को विजेता घोषित किया गया है। इस जीत की आधिकारिक घोषणा होते ही गांधीनगर में पार्टी के मुख्य कार्यालय और कार्यकर्ताओं के बीच भारी उत्साह और खुशी का माहौल छा गया। सभी विजयी उम्मीदवारों ने इस महत्वपूर्ण अवसर और जीत के लिए पार्टी के केंद्रीय और राज्य स्तर के शीर्ष नेतृत्व का दिल से आभार व्यक्त किया।
इस बीच राजस्थान की तीन राज्यसभा सीटों के लिए चल रही चुनावी प्रक्रिया भी पूरी हो चुकी है। नाम वापसी की अंतिम तारीख के बाद भाजपा के सतीश पूनिया और अलका गुर्जर तथा कांग्रेस के नीरज डांगी निर्विरोध निर्वाचित घोषित किए गए है।

समाचार संपादक की कलम से
–राहुल कौशिक

ताइवान की उड़ानः दुनिया का 5वां सबसे बड़ा शेयर बाजार, लेकिन किस कीमत पर?

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

वैश्विक वित्तीय जगत में हाल ही में एक ऐसा आंकड़ा सामने आया है जिसने निवेशकों और अर्थशास्त्रियों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया है। InvestorSight Research द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार ताइवान लगभग 5 ट्रिलियन डॉलर के कुल मार्केट कैपिटलाइजेशन के साथ दुनिया का पांचवां सबसे बड़ा शेयर बाजार बन गया है। इस उपलब्धि के साथ उसने भारत को मामूली अंतर से पीछे छोड़ दिया है, जिसका बाजार पूंजीकरण लगभग 4.9 ट्रिलियन डॉलर है।
पहली नजर में यह ताइवान की बड़ी आर्थिक सफलता दिखाई देती है। लगभग 2.3 करोड़ आबादी वाला यह छोटा सा द्वीपीय देश दुनिया की कई बड़ी अर्थव्यवस्थाओं को पीछे छोड़ चुका है। लेकिन जब इस सफलता के पीछे छिपे आंकड़ों को ध्यान से देखा जाता है, तो एक अलग ही कहानी सामने आती है। यही कारण है कि रिपोर्ट का शीर्षक है – "Taiwan Jumps to No. 5, But At What Cost?" अर्थात "ताइवान पांचवें स्थान पर पहुंचा, लेकिन किस कीमत पर?"
दुनिया के सबसे बड़े शेयर बाजार- वर्तमान आंकड़ों के अनुसार अमेरिका लगभग 78 ट्रिलियन डॉलर के साथ दुनिया का सबसे बड़ा शेयर बाजार बना हुआ है। इसके बाद चीन 16.6 ट्रिलियन डॉलर, जापान 8.7 ट्रिलियन डॉलर और हांगकांग 7.3 ट्रिलियन डॉलर के साथ क्रमशः दूसरे, तीसरे और चौथे स्थान पर हैं।
पांचवें स्थान पर ताइवान है, जबकि भारत छठे स्थान पर मौजूद है। इसके बाद दक्षिण कोरिया, कनाडा, यूनाइटेड किंगडम और फ्रांस जैसे विकसित देशों का स्थान आता है।
ताइवान की यह उपलब्धि निश्चित रूप से उल्लेखनीय है, लेकिन इसके पीछे एक ऐसा तथ्य छिपा है जिसने विशेषज्ञों को चिंतित भी किया है।
जब एक कंपनी बन जाए पूरे बाजार की पहचान- रिपोर्ट के अनुसार ताइवान के कुल शेयर बाजार मूल्य का लगभग 42 प्रतिशत हिस्सा केवल एक कंपनी – TSMC (Taiwan Semiconductor Manufacturing Company) – के पास है।
यदि ताइवान के कुल बाजार मूल्य को 5 ट्रिलियन डॉलर माना जाए, तो लगभग 2.1 ट्रिलियन डॉलर की हिस्सेदारी अकेले TSMC की है। यह दुनिया के किसी भी बड़े शेयर बाजार में देखने को मिलने वाला सबसे बड़ा प्रभाव है।
तुलना करें तो अमेरिका में Nvidia जैसी दिग्गज कंपनी पूरे अमेरिकी शेयर बाजार का लगभग 6.7 प्रतिशत, भारत में Reliance Industries लगभग 4 प्रतिशत, चीन में Tencent लगभग 3 प्रतिशत और जापान में SoftBank लगभग 3.2 प्रतिशत हिस्सेदारी रखती है। दक्षिण कोरिया में Samsung का प्रभाव जरूर बड़ा है, लेकिन उसकी हिस्सेदारी भी लगभग 29 प्रतिशत है, जो ताइवान के 42 प्रतिशत से काफी कम है।
यही कारण है कि विशेषज्ञ ताइवान के शेयर बाजार को लेकर Concentration Risk यानी अत्यधिक निर्भरता के जोखिम की चर्चा कर रहे हैं।
क्या है Concentration Risk?
निवेश की दुनिया में एक पुरानी कहावत है कि सारे अंडे एक ही टोकरी में नहीं रखने चाहिए।
जब किसी देश की आर्थिक सफलता या शेयर बाजार की मजबूती किसी एक कंपनी या एक उद्योग पर अत्यधिक निर्भर हो जाती है, तो उसे Concentration Risk कहा जाता है।
आज ताइवान की स्थिति कुछ ऐसी ही है। यदि TSMC अच्छा प्रदर्शन करती है तो पूरा बाजार मजबूत दिखाई देता है। लेकिन यदि किसी कारण से कंपनी को झटका लगता है तो पूरे ताइवान के शेयर बाजार पर उसका असर दिखाई देगा।
यही इस सफलता का सबसे बड़ा जोखिम भी है।
TSMC आखिर इतनी महत्वपूर्ण क्यों है?
आज दुनिया Artificial Intelligence यानी AI क्रांति के दौर से गुजर रही है। ChatGPT, Gemini, Claude, Copilot और अन्य AI प्लेटफॉर्म्स को चलाने के लिए अत्याधुनिक सेमीकंडक्टर चिप्स की आवश्यकता होती है।
इन चिप्स के निर्माण में TSMC दुनिया की सबसे महत्वपूर्ण कंपनियों में से एक है।
Apple के iPhone प्रोसेसर, Nvidia के AI चिप्स, AMD के हाई-परफॉर्मेंस प्रोसेसर और दुनिया की कई बड़ी तकनीकी कंपनियों के उत्पाद TSMC की फैक्ट्रियों में तैयार होते हैं।
5 नैनोमीटर और उससे भी उन्नत चिप निर्माण तकनीक में TSMC की वैश्विक पकड़ इतनी मजबूत है कि दुनिया की अधिकांश बड़ी टेक कंपनियां उस पर निर्भर हैं।
AI की बढ़ती मांग का सबसे बड़ा लाभ TSMC को मिला है और इसी के कारण उसकी बाजार कीमत में जबरदस्त वृद्धि हुई है।
ताइवान के सामने मौजूद चुनौतियां-
हालांकि वर्तमान समय में TSMC मजबूत स्थिति में है, लेकिन कुछ ऐसे जोखिम हैं जिन्हें नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।
सबसे बड़ा जोखिम चीन और ताइवान के बीच भू-राजनीतिक तनाव है। चीन लंबे समय से ताइवान पर अपना दावा करता रहा है और समय-समय पर दोनों के बीच तनाव बढ़ता रहा है।
दूसरा जोखिम तकनीकी प्रतिस्पर्धा का है। सेमीकंडक्टर उद्योग तेजी से बदलता है और यदि भविष्य में कोई प्रतिस्पर्धी कंपनी तकनीकी बढ़त हासिल कर लेती है, तो इसका असर TSMC पर पड़ सकता है।
तीसरा जोखिम प्राकृतिक आपदाओं का है। ताइवान भूकंप प्रभावित क्षेत्र में स्थित है और किसी बड़ी प्राकृतिक आपदा का प्रभाव वैश्विक सप्लाई चेन तक महसूस किया जा सकता है।
इसके अलावा अमेरिका और चीन के बीच बढ़ते तकनीकी संघर्ष का असर भी भविष्य में TSMC पर पड़ सकता है।
भारत और ताइवान की तुलना कितनी उचित है?
ताइवान और भारत की तुलना केवल बाजार पूंजीकरण के आधार पर नहीं की जानी चाहिए।
भारत का शेयर बाजार बैंकिंग, आईटी, फार्मा, ऑटोमोबाइल, ऊर्जा, टेलीकॉम, इंफ्रास्ट्रक्चर और उपभोक्ता वस्तुओं जैसे अनेक क्षेत्रों पर आधारित है। यहां किसी एक कंपनी का प्रभाव पूरे बाजार पर सीमित है।
दूसरी ओर ताइवान की सबसे बड़ी ताकत उसका सेमीकंडक्टर उद्योग है। यह विशेषज्ञता उसे वैश्विक तकनीकी शक्ति बनाती है, लेकिन यही उसकी सबसे बड़ी निर्भरता भी है।
इसलिए दोनों देशों के आर्थिक मॉडल अलग हैं और उनकी तुलना केवल रैंकिंग के आधार पर करना उचित नहीं होगा।
निष्कर्ष- ताइवान का दुनिया का पांचवां सबसे बड़ा शेयर बाजार बनना उसकी तकनीकी क्षमता, दूरदर्शी नीतियों और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में उसकी सफलता का प्रमाण है। एक छोटे देश ने दुनिया की सबसे महत्वपूर्ण तकनीकी सप्लाई चेन पर अपनी मजबूत पकड़ बनाई है और उसका लाभ पूरे देश को मिला है। लेकिन इस सफलता के पीछे एक चेतावनी भी छिपी है। जब किसी देश के शेयर बाजार का 42 प्रतिशत हिस्सा एक ही कंपनी पर निर्भर हो, तो वही कंपनी उसकी सबसे बड़ी ताकत और सबसे बड़ी कमजोरी दोनों बन जाती है।
आज TSMC ताइवान की आर्थिक उड़ान का इंजन है। लेकिन आने वाले वर्षों में यह देखना दिलचस्प होगा कि क्या ताइवान अपनी अर्थव्यवस्था और बाजार को और अधिक विविध बना पाता है या फिर उसकी किस्मत एक ही कंपनी के प्रदर्शन से जुड़ी रहती है।
क्योंकि आखिरकार सवाल केवल यह नहीं है कि ताइवान पांचवें स्थान पर पहुंच गया है, बल्कि यह भी है कि क्या वह इस स्थान को लंबे समय तक बनाए रख पाएगा? यही प्रश्न आने वाले दशक में ताइवान की आर्थिक कहानी तय करेगा।

विकसित भारत 2047 के लिए बनाया गया मास्टर प्लान

नीति आयोग की बैठक में पीएम ने राज्यों को दिया विकास का मंत्र

दैनिक कारखाने का सफर।
एजेंसी नई दिल्ली

नीति आयोग की शासी परिषद की 11वीं बैठक में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वैश्विक अनिश्चितता और अस्थिरता के दौर में भी भारत की मजबूत विकास यात्रा पर भरोसा जताते हुए कहा कि देश आत्मविश्वास और दृढ़ संकल्प के साथ विकसित भारत के लक्ष्य की ओर तेजी से आगे बढ़ रहा है। प्रधानमंत्री ने कहा कि वर्ष 2047 तक विकसित भारत के सपने को साकार करने के लिए केंद्र और राज्यों के बीच समन्वय, सहयोग और साझा जिम्मेदारी बेहद आवश्यक है। उन्होंने जोर देकर कहा कि सहकारी संघवाद की भावना ही भारत को नई ऊंचाइयों तक ले जाएगी। हम आपको बता दें कि नयी दिल्ली में राष्ट्रपति भवन स्थित संस्कृति केंद्र में आयोजित इस बैठक का मुख्य विषय "विकसित भारत 2047 के लिए समावेशी मानव विकास" रखा गया, जिसके अंतर्गत देश के हर नागरिक के विकास, सम्मान और समान अवसरों पर विशेष ध्यान दिया गया।
बैठक में देशभर के मुख्यमंत्री और उपराज्यपाल शामिल हुए तथा समावेशी मानव विकास ढांचे के चार प्रमुख स्तंभों पर चर्चा हुई। इनमें बुनियादी मानव पूंजी और भविष्य के लिए तैयार कौशल, उत्पादक रोजगार और उद्यमिता, स्वास्थ्य तथा पोषण और सभी के लिए समानता एवं गरिमा जैसे विषय शामिल रहे।
प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि भारत का जनसांख्यिकीय लाभ देश के लिए एक ऐतिहासिक अवसर है और इसे गंवाया नहीं जा सकता। उन्होंने युवाओं को विकसित भारत की सबसे बड़ी शक्ति बताते हुए कहा कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, मांग आधारित कौशल विकास और व्यापक रोजगार अवसरों का निर्माण सरकारों की सर्वोच्च प्राथमिकता होना चाहिए। प्रधानमंत्री ने कहा कि सशक्त युवा ही भारत की विकास यात्रा को नई गति देंगे। बैठक में उद्यमिता को बढ़ावा देने, कौशल विकास को मजबूत करने और टिकाऊ रोजगार के अवसर पैदा करने के उपायों पर विस्तार से विचार विमर्श किया गया।
प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत ने कई देशों के साथ मुक्त व्यापार समझौते किए हैं, जिनसे निर्यात और आर्थिक विकास के नए अवसर पैदा हुए हैं। उन्होंने कहा कि इन समझौतों से सूक्ष्म, लघु और मझोले उद्यमों को वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धी बनने का अवसर मिलेगा। प्रधानमंत्री ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय मानकों का पालन और गुणवत्ता सुधार के माध्यम से भारतीय उद्योग विश्व बाजार में अपनी मजबूत पहचान बना सकते हैं।
महिला सशक्तीकरण पर विशेष जोर देते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि महिला नेतृत्व वाला विकास विकसित भारत की आधारशिला है। उन्होंने कहा कि खेती, नवाचार, विज्ञान, उद्योग और नवउद्यम जैसे क्षेत्रों में नारी शक्ति का योगदान लगातार बढ़ रहा है। प्रधानमंत्री ने राज्यों से महिलाओं की शिक्षा, सुरक्षा, कौशल विकास और आर्थिक सशक्तीकरण को सर्वोच्च प्राथमिकता देने की अपील की। उनका कहना था कि महिलाओं की पूरी क्षमता का उपयोग किए बिना भारत का समग्र विकास संभव नहीं है।
बैठक में शासन व्यवस्था, डिजिटल सार्वजनिक ढांचे और साझेदारी को विकास के प्रमुख साधन के रूप में रेखांकित किया गया। साथ ही जवाबदेही और परिणाम आधारित कार्यप्रणाली पर भी बल दिया गया ताकि विकास योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंच सके। शासी परिषद ने दिसंबर 2025 में आयोजित मुख्य सचिवों के राष्ट्रीय सम्मेलन की सिफारिशों पर भी विचार किया।
हम आपको यह भी बता दें कि वैसे तो बैठक में तमाम राज्यों के मुख्यमंत्री आये लेकिन कर्नाटक के नये मुख्यमंत्री डीके शिवकुमार की उपस्थिति ने सबका ध्यान खींचा। दरअसल कर्नाटक की कांग्रेस सरकार की ओर से पिछले कुछ वर्षों में नीति आयोग की बैठकों से दूरी बनाए रखने की परंपरा के विपरीत शिवकुमार ने इस बार बैठक में भाग लेने का निर्णय लिया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने मुख्यमंत्री बनने के बाद उन्हें सहयोग का भरोसा दिया था और राज्य के हित में केंद्र के साथ मिलकर काम किया जाएगा। शिवकुमार ने बैठक में कर्नाटक की आवश्यकताओं और विकास योजनाओं को मजबूती से रखा। उन्होंने बेंगलुरु को देश की आर्थिक और तकनीकी शक्ति बताते हुए कहा कि दुनिया भारत को बेंगलुरु के माध्यम से देख रही है। उन्होंने राज्य में आधारभूत ढांचे, शहरी परिवहन और कृषि क्षेत्र में निवेश बढ़ाने की आवश्यकता पर जोर दिया। इसके अलावा, अन्य राज्यों के मुख्यमंत्री और केंद्र शासित राज्यों के उपराज्यपालों ने अपने अपने राज्य से संबंधित मांगें और सुझाव बैठक के दौरान रखे साथ ही अपनी उपलब्धियों का विवरण भी प्रस्तुत किया। हम आपको बता दें कि आमतौर पर, इस परिषद की बैठक हर साल होती है। पिछले वर्ष यह 24 मई को आयोजित की गई थी।

लघुकथा दिवस 19 जून को हिंदी भवन भोपाल में अ.भा. लघुकथा अधिवेशन एवं सम्मान समारोह

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

लघुकथा शोध केंद्र समिति भोपाल द्वारा आगामी 19 जून को 'एक टोकरी भर मिट्टी ' हिंदी की पहली लघुकथा के लेखक पंडित माधवराव सप्रे की जन्म जयंती पर आयोजित 'लघुकथा दिवस ' के अवसर पर अखिल भारतीय लघुकथा अधिवेशन एवं अलंकरण समारोह हिंदी भवन के मुख्य सभाकक्ष में आयोजित किया जा रहा है | इसमें 'शिक्षा साहित्य और समाज लघुकथा का बदलता स्वरूप संदर्भ' विषय पर केंद्रित चर्चा की जाएगी | सम्मान समारोह, विमर्श,शोध -पत्र वाचन एवं लघुकथा पाठ के इस राष्ट्रीय आयोजन के प्रथम /द्वितीय सत्र में उद्घाटन एवं अलंकरण का कार्यक्रम आयोजित है इस सत्र की अध्यक्षता करेंगे डॉ.उमेश कुमार सिंह वरिष्ठ साहित्यकार एवं पूर्व निदेशक साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद भोपाल ,मुख्य अतिथि होंगे डॉ.ध्रुव कुमार, वरिष्ठ साहित्यकार पटना ,विशिष्ट अतिथि डॉ.नुसरत मेहंदी निदेशक उर्दू अकादमी भोपाल, एवं सारस्वत अतिथि के रूप में राकेश शर्मा सम्पादक 'वीणा' पत्रिका इंदौर, डॉ.मिथिलेश दीक्षित पटना एवं ज्योति जैन वरिष्ठ साहित्यकार इंदौर उपस्थित रहेंगे |
इस अवसर पर किशोर बागड़े इंदौर द्वारा पोस्टर प्रदर्शनी लगाई जाएगी साथ ही 'एक टोकरी भर मिट्टी 'लघुकथा पंडित माधव सप्रे का वाचन श्रीमती अंजू खरबंदा दिल्ली द्वारा किया जाएगा |हमारी शाखाएं, परिकल्पना एवं विस्तार विषय पर राष्ट्रीय

संयोजक विजय जोशी महेश्वर अपनी बात रखेंगे और सध्य प्रकाशित कृतियों का विमोचन किया जाएगा | इस आयोजन में माधवराव सप्रे अखिल भारतीय लघुकथा अलंकरण डॉ. सूर्यकांत नागर इंदौर,पद्मश्री पंडित रामनारायण उपाध्याय स्मृति लघुकथा प्रादेशिक सम्मान श्रीमती ज्योति जैन इंदौर,अचार्य जगदीश चंद्र मिश्र आलोचना सम्मान डॉ. अनीता राकेश पटना, श्रीमती मातु श्री धनवंती देवी लघुकथा सम्मान सरिता वाघेला भोपाल, विशिष्ट हिंदी सेवी सम्मान डॉ. मिथिलेश दीक्षित,डॉ. उपासना सक्सेना लघुकथा शोध प्रेरणा सम्मान प्रिंस कुमार गोरखपुर, डॉ.उपासना सक्सेना दिव्यांग प्रेरणा सम्मान श्रीमती कोमल बाधवानी उज्जैन,संवाद भारती सम्मान वरिष्ठ स्वतंत्र पत्रकार राजकुमार बरुआ एवं युवा पत्रकार अभिषेक पुरोहित,साहित्यिक सांस्कृतिक पत्रकारिता सम्मान डॉ. राकेश शर्मा इंदौर को प्रदान किया जाएगा| इसके साथ ही 'लघुकथा श्री 'सम्मान से डॉ.वर्षा ढोबले भोपाल डॉ.नितिन उपाधेय यूएई ,अर्चना त्यागी रुड़की झारखंड,मिन्नी मिश्रा पटना, वंदना गोपाल शर्मा शैली भाटापारा,नीना मंदिलवार रांची झारखंड, गीता चौबे गूँज बैंगलोर,भारती पाराशर जबलपुर,अनिल श्रीवास्तव गुरुग्राम आरती सिंह एकता नागपुर,दीपा मनीष व्यास इंदौर,संध्या शुक्ला मृदुल मंडला,विजय कुमार शर्मा कोटा,को प्रदान किया जाएगा इसके साथ ही पारस दासोत स्मृति लघुकथा सम्मान मीरा जैन उज्जैन, विक्रम सोनी स्मृति लघुकथा कृति सम्मान डॉ.हरप्रीत सिंह राणा पंजाब को प्रदान किया जाएगा तृतीय सत्र 'शोध के विविध आयाम 'आचार्य संजीव वर्मा सलिल जबलपुर अध्यक्षता,डॉ. ऋचा शर्मा अहिल्याबाई नगर मुख्य अतिथि विशिष्ट अतिथि के रूप में संतोष श्रीवास्तव,डॉ.अनीता राकेश, श्रीमती अंतरा करवड़े, उपस्थित रहेंगे चतुर्थ सत्र 'सृजन और समीक्षा 'का होगा जिसकी अध्यक्षता करेंगे मो. आजम और मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे डॉ.योगेंद्र नाथ शुक्ला इंदौर इस सत्र में विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ सुशीला टाकभोरे नागपुर डॉ.मालती वसंत, डॉ. क्षमा पाण्डेय एवं अलका सिगतिया मुंबई, डॉ हरप्रीत सिंह पंजाब उपस्थित रहेंगे |

दैनिक कारखाने का सफर अखबार का संपादकीय कार्यालय
गोबिंद टॉवर, क्वालिटी रेस्टोरेंट के पास, एसबी स्टूडियों के ऊपर पिपलानी पेट्रोल पंप के पास, सोनागिरी चौराहा रायसेन रोड भेल भोपाल। मोबाइल नंबरः 9826035849, 9425006706

गतांक से आगे : लोक कल्याण हेतु दादाजी का अवतरण

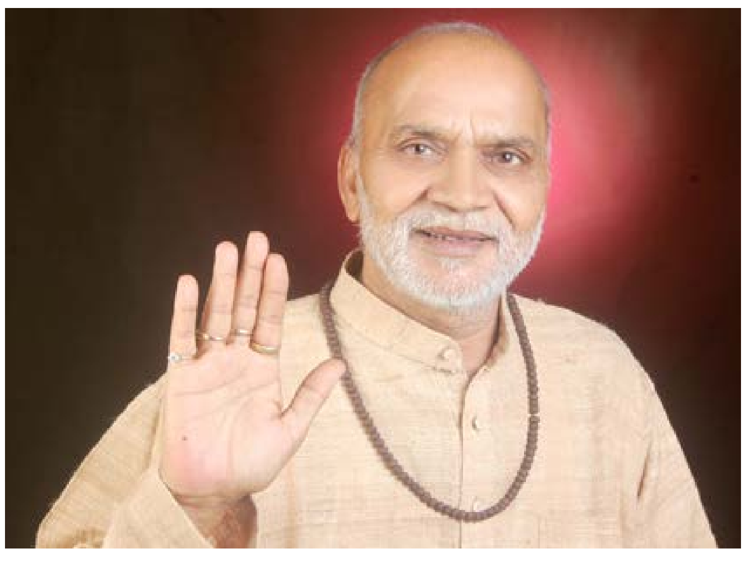

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

सर्वज्ञता, करुणा और भक्त कल्याण की एक प्रेरणादायक घटना सन 1993 की यह घटना दादाजी गुरुदेव की दिव्य कृपा, अद्भुत आध्यात्मिक शक्ति और लोककल्याणकारी स्वरूप को प्रकट करती है। उस समय एक प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य, जिनकी प्रतिष्ठा अनेक प्रभावशाली एवं प्रतिष्ठित व्यक्तियों के बीच थी, एक वरिष्ठ नेता के निवास पर पहुंचे। संयोगवश उस परिवार में एक बहुमूल्य हार कहीं रखकर भूल जाने के कारण नहीं मिल रहा था। परिवार के सदस्य अत्यंत चिंतित थे और सभी स्थानों पर खोजबीन करने के बाद भी उसका कोई पता नहीं चल सका। नेताजी ने ज्योतिषाचार्य से निवेदन किया कि वे अपनी विद्या के माध्यम से हार का स्थान बताने का प्रयास करें। ज्योतिषाचार्य ने तत्काल उत्तर देने के स्थान पर कहा कि वे घर जाकर गणना एवं विचार करके जानकारी देंगे। वहां से निकलने के पश्चात वे सीधे शिवाजी नगर स्थित दादाजी गुरुदेव के पावन दरबार में पहुंचे और अत्यंत विनम्र भाव से पूरी परिस्थिति निवेदित की। दादाजी गुरुदेव सदैव अपने आराध्य एवं परम पूज्य बड़े दादाजी भगवान भृंगी ऋषि के श्रीचरणों में समर्पित भाव रखते थे। उन्होंने दिव्य सत्ता से मार्गदर्शन की प्रार्थना की। कृपा स्वरूप संकेत प्राप्त हुआ कि खोया हुआ हार घर में बिछी कालीन के नीचे सुरक्षित रखा हुआ है। यह जानकारी प्राप्त होने पर ज्योतिषाचार्य पुनः नेताजी के निवास पर पहुंचे। वहां पहुंचकर उन्होंने अपनी परंपरागत पद्धति के अनुसार गणना करने का भाव प्रकट किया और कुछ समय पश्चात बताया कि हार कालीन के नीचे देखने पर प्राप्त हो जाएगा। जब परिवारजनों ने कालीन हटाकर देखा तो वास्तव में वही

हार वहां सुरक्षित मिल गया। लंबे समय से चली आ रही चिंता एक क्षण में समाप्त हो गई और सभी आश्चर्यचकित रह गए। इस घटना के बाद नेताजी का विश्वास उस ज्योतिषाचार्य पर और अधिक बढ़ गया, किंतु ज्योतिषाचार्य स्वयं भली-भांति जानते थे कि यह उनकी व्यक्तिगत क्षमता का परिणाम नहीं, बल्कि दादाजी गुरुदेव की दिव्य कृपा और आध्यात्मिक सामर्थ्य का प्रत्यक्ष प्रमाण था। उन्होंने अनुभव किया कि दादाजी केवल बाहरी परिस्थितियों को ही नहीं, बल्कि समय, स्थान और घटनाओं के सूक्ष्म रहस्यों को भी सहज रूप से जानने की क्षमता रखते थे।

यह प्रसंग श्रद्धालुओं को यह संदेश देता है कि जब कोई संत लोकमंगल, सेवा और ईश्वरभक्ति के मार्ग पर पूर्ण समर्पण के साथ स्थित होता है, तब उसके माध्यम से दिव्य कृपा कार्य करती है। दादाजी गुरुदेव का संपूर्ण जीवन जनकल्याण, मार्गदर्शन, दुखियों के सहारा बनने और भक्तों के विश्वास को दृढ़ करने के लिए समर्पित रहा। उनके श्रीचरणों में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रूप में आध्यात्मिक प्रेरणा, मानसिक शांति और जीवन की नई दिशा प्राप्त करता था। ऐसी अनेक घटनाएं भक्तों के अनुभवों में वर्णित हैं, जो यह दर्शाती हैं कि दादाजी गुरुदेव का अवतरण केवल व्यक्तिगत सिद्धि के लिए नहीं, बल्कि समाज में श्रद्धा, विश्वास, धर्म, सेवा और लोककल्याण की भावना को जागृत करने के लिए हुआ था। उनके जीवन का प्रत्येक क्षण मानवता के उत्थान और भक्तों के कल्याण हेतु समर्पित रहा।

"जहां श्रद्धा, विश्वास और समर्पण होता है, वहां गुरुकृपा असंभव को भी संभव बना देती है। पूज्य दादाजी गुरुदेव का जीवन इसी दिव्य सत्य का प्रेरणादायक उदाहरण है।

4 से 14 वर्ष के बच्चों के लिए 'लिटिल रीडर्स क्लब' 14 जून से होगा शुरू

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

भोपाल के बच्चों में पढ़ने की आदत विकसित करने और उन्हें मोबाइल स्क्रीन से दूर रखने के उद्देश्य से स्वामी विवेकानंद लाइब्रेरी, न्यू मार्केट द्वारा एक नई पहल की शुरुआत की जा रही है। 14 जून (रविवार) को यहां 'लिटिल रीडर्स क्लब' का शुभारंभ होगा, जिसमें 4 से 14 वर्ष आयु वर्ग के बच्चे भाग ले सकेंगे। लाइब्रेरी प्रबंधन के अनुसार, इस क्लब का उद्देश्य बच्चों में पठन-पाठन के प्रति रुचि जगाना, उनकी कल्पनाशक्ति को विकसित करना और उन्हें पुस्तकों की दुनिया से जोड़ना है। यह क्लब विशेष रूप से लाइब्रेरी के सदस्यों के लिए संचालित किया जाएगा।

लाइब्रेरी के प्रबंधक यतीश भटेले ने बताया कि बच्चों को उनकी उम्र के अनुसार दो समूहों में विभाजित किया गया है। 'लिटिल बड्स' (4–8 वर्ष) समूह में कहानी सुनना-सुनाना, चित्र पुस्तकों का परिचय और प्रारंभिक पठन गतिविधियां होंगी। वहीं 'पेज टर्नर्स' (9–14 वर्ष) समूह के बच्चों के लिए पुस्तक पठन के साथ संवादात्मक और रचनात्मक गतिविधियां आयोजित की जाएंगी। शुभारंभ कार्यक्रम 14 जून को शाम 5 बजे आयोजित होगा, जिसमें कई रोचक गतिविधियां रखी गई हैं। 'बुक जैकेट डिजाइन' के तहत बच्चे अपनी पसंदीदा पुस्तक का नया कवर तैयार करेंगे और उसका आकर्षक परिचय लिखेंगे। वहीं 'बुक पिच' गतिविधि में वे विज्ञापन विशेषज्ञ की तरह अपनी पसंदीदा किताब को प्रस्तुत करेंगे। इसके अलावा कहानी वाचन, पुस्तक चर्चा, चित्रकला एवं क्राफ्ट, शब्द और पहेली खेल, रचनात्मक लेखन, रोल प्ले, क्विज प्रतियोगिता और समूह गतिविधियां भी आयोजित होंगी। इन गतिविधियों के माध्यम से बच्चों में आत्मविश्वास, अभिव्यक्ति कौशल और टीमवर्क की भावना विकसित करने पर जोर दिया जाएगा।

भटेले ने बताया कि इस क्लब की गतिविधियां हर 15 दिनों में आयोजित की जाएंगी, ताकि बच्चों में नियमित पठन की आदत विकसित हो सके। क्लब का संचालन तूलिका श्री और अनीर्बन चक्रबर्ती द्वारा किया जाएगा, जो बचपन से ही लाइब्रेरी से जुड़े रहे हैं और पूर्व में भी कई साहित्यिक एवं रचनात्मक कार्यक्रमों का सफल संचालन कर चुके हैं।

मंत्री गौतम टेटवाल ने प्रबुद्धजनों और व्यापारियों से किया संवाद

मोदी सरकार के 12 वर्ष पूर्ण होने पर सारंगपुर में भाजपा का विशेष जनसंपर्क अभियान तेज

दैनिक कारखाने का सफर। सारंगपुर

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार के सेवा, सुशासन एवं गरीब कल्याण के 12 गौरवशाली वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में भारतीय जनता पार्टी द्वारा चलाया जा रहा "विशेष जनसंपर्क अभियान" सारंगपुर विधानसभा क्षेत्र में व्यापक स्तर पर जारी है। अभियान के तहत स्थानीय विधायक एवं मध्य प्रदेश शासन के राज्यमंत्री श्री गौतम टेटवाल ने नगर के विभिन्न क्षेत्रों में पहुंचकर प्रबुद्धजनों, समाजसेवियों, वरिष्ठ नागरिकों एवं व्यापारिक वर्ग के प्रतिनिधियों से आत्मीय भेंट कर केंद्र सरकार की उपलब्धियों और जनकल्याणकारी योजनाओं पर संवाद किया।अभियान के दौरान मंत्री गौतम टेटवाल नगर के विभिन्न प्रतिष्ठानों, कार्यालयों एवं निवासों पर पहुंचे और समाज के विभिन्न वर्गों से जुड़े लोगों से मुलाकात कर केंद्र सरकार की योजनाओं की जानकारी साझा की।उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश में हुए विकास कार्यों, गरीब कल्याण, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक सुरक्षा, आधारभूत संरचना के विस्तार तथा आत्मनिर्भर भारत अभियान की उपलब्धियों पर विस्तार से चर्चा की।

इस अवसर पर मंत्री टेटवाल ने समाज के वरिष्ठ नागरिकों, सेवानिवृत्त कर्मचारियों एवं सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय व्यक्तियों से भी भेंट की। उन्होंने देश के विकास, सामाजिक समरसता, सनातन संस्कृति के संरक्षण एवं जनभागीदारी के विषयों पर उनके सुझाव प्राप्त किए। मंत्री ने कहा कि समाज के अनुभवी और प्रबुद्ध नागरिकों के विचार विकास की दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने विभिन्न परिवारों के सदस्यों से भी आत्मीय मुलाकात कर कुशलक्षेम जानी और पारिवारिक संबंधों को मजबूत बनाने का प्रयास किया।

जनसंपर्क अभियान के दौरान प्रबुद्धजनों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश में हो रहे विकास कार्यों की सराहना की तथा राष्ट्र निर्माण के कार्यों में अपनी सकारात्मक सहभागिता का भरोसा दिलाया। कई समाजसेवियों और वरिष्ठ नागरिकों ने केंद्र सरकार की विभिन्न योजनाओं को जनहितकारी बताते हुए उन्हें समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने की आवश्यकता पर बल दिया।वहीं नगर के व्यापारिक एवं उद्यमी वर्ग से संवाद करते हुए मंत्री गौतम टेटवाल ने देश की आर्थिक प्रगति, स्थानीय व्यापारिक वातावरण, रोजगार सृजन तथा आत्मनिर्भर भारत अभियान जैसे विषयों पर चर्चा की।

व्यापारियों ने भी केंद्र सरकार द्वारा किए जा रहे आर्थिक सुधारों एवं व्यापार हितैषी नीतियों की सराहना की।

मंत्री गौतम टेटवाल ने कहा कि देश के व्यापारी, उद्यमी और मेहनतकश नागरिक भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। उनका विश्वास, परिश्रम और योगदान ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत एवं आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को साकार करने की सबसे बड़ी शक्ति है। उन्होंने कहा कि भाजपा का यह जनसंपर्क अभियान केवल राजनीतिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि जनता से सीधे संवाद स्थापित कर उनकी अपेक्षाओं और सुझावों को जानने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

इस अवसर पर भाजपा के वरिष्ठ नेता निर्मल जैन, नगर महामंत्री कमल राठौर, नगर पालिका उपाध्यक्ष प्रतिनिधि निलेश वर्मा, वरिष्ठ भाजपा नेता सुधीर श्रीमाल, गोपाल वैद्य सहित बड़ी संख्या में भाजपा पदाधिकारी, कार्यकर्ता एवं स्थानीय गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।भाजपा नेताओं ने कहा कि अभियान के दौरान समाज के विभिन्न वर्गों से मिल रहा व्यापक समर्थन, स्नेह और आत्मीयता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार की जनहितकारी नीतियों तथा जनता के अटूट विश्वास का प्रतीक है। उन्होंने बताया कि विशेष जनसंपर्क अभियान आगामी दिनों में भी सारंगपुर विधानसभा क्षेत्र के विभिन्न गांवों एवं नगर क्षेत्रों में निरंतर जारी रहेगा।

वन बंधु परिषद का संजीवनी– विश्व तंबाकू निषेध जागरूकता एवं स्क्रीनिंग अभियान सम्पन्न

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

वन बंधु परिषद फ्रेंड्स ऑफ ट्राइबल्स सोसायटी द्वारा द्वारा 10 दिवसीय तक गोविंदपुरा औद्योगिक क्षेत्र में "संजीवनी" नाम से एक विशेष तंबाकू निषेध जागरूकता एवं निःशुल्क ओरल हेल्थ स्क्रीनिंग अभियान चलाया गया, इसमें 1000 से अधिक लोगों की स्क्रीनिंग की गई, इस अभियान को सफल बनाने में गोविंद पूरा इंडस्ट्रीज एसोशियशन का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। साथ ही डॉ. कीर्ति श्रीवास्तव एवं नितिन बंसल कि महत्वपूर्ण भूमिका और सतत मार्गदर्शन इस पूरे अभियान की सफलता का आधार रहा वन बंधु परिषद FTS Yuva Bhopal की पूरी टीम के सभी युवा साथियों ने स्वयं सक्रियता के साथ अच्छे स्वास्थ से बढ़कर कुछ नहीं वाक्य के साथ जन जागरूकता के लिए सक्रिय रहे, अध्यक्ष मनीष नाहर सचिव विशाल अजमेरा ने बताया। इस अभियान में पीपुल्स कॉलेज साइंस रिसर्च सेंटर का सहयोग प्राप्त हुआ। कॉलेज के समर्पित डॉक्टरों और टीम ने अथक प्रयास किया, स्क्रीनिंग शिविर में मशीनों द्वारा जांच की गई,

सभी उद्योगों के प्रबंधन एवं कर्मचारियों उनके सहयोग, समन्वय और सकारात्मक सहभागिता से 8 दिवसीय स्क्रीनिग शिविर सम्पन्न हुआ, डॉक्टरों द्वारा कर्मचारियों को सिगरेट, तंबाकू एवं अन्य नशे की आदतों से होने वाले गंभीर स्वास्थ्य दुष्प्रभावों के बारे में विस्तार से जानकारी देकर उचित परामर्श दिया तथा सभी को इन हानिकारक आदतों से दूर रहने के लिए प्रेरित किया गया,,,, जन जागरूकता अभियान के चलते सभी उद्योगों में एंटी-टोबैको जागरूकता पोस्टर्स भी वितरित किए गए, ताकि तंबाकू के दुष्प्रभावों के प्रति सभी कर्मचारियों को निरंतर जागरूक किया जा सके और उन्हें हर समय स्वस्थ जीवनशैली अपनाने की प्रेरणा मिलती रहे। "तंबाकू छोड़ें, स्वस्थ जीवन अपनाएं — यही संजीवनी का संदेश के साथ वन बंधु परिषद के अध्यक्ष मनीष नाहर सचिव विशाल अजमेरा कोषाध्यक्ष जतिन खुराना अर्पणा बंसल अभिषेक कुल श्रेष्ठ अभिनव अग्रवाल विजेता भार्गव किरण अग्रवाल का सहयोग रहा।

आज शुक्रवार को प्रदोष व्रत पर प्रदोष काल में होगा भगवान शिव का सामूहिक अभिषेक

परमा (कमला) एकादशी पर दादाजी धाम मंदिर में भगवान लक्ष्मी-नारायण एवं राधा-कृष्ण का विशेष श्रृंगार, कथा, महाआरती एवं भजन-कीर्तन सम्पन्न

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

जागृत एवं दर्शनीय तीर्थस्थल दादाजी धाम मंदिर, रायसेन रोड, पटेल नगर, भोपाल में अधिकमास की पावन परमा (कमला) एकादशी के शुभ अवसर पर गुरुवार को भगवान लक्ष्मी-नारायण, राधा-कृष्ण एवं लड्डू गोपाल का विशेष एवं मनोहारी श्रृंगार किया गया। इस अवसर पर सायं 5:30 बजे से श्री सत्यनारायण कथा, पूजन, महाआरती एवं भजन-संध्या का आयोजन सम्पन्न हुआ। मंदिर में विराजित भगवान श्रीकृष्ण त्रिभंग मुद्रा में भक्तों को दिव्य दर्शन दे रहे थे। उनके हाथों में सुशोभित मुरली प्रेम, माधुर्य एवं भक्ति का संदेश प्रदान कर रही थी। मस्तक पर रत्नजड़ित मुकुट तथा मोरपंख उनकी अलौकिक शोभा को बढ़ा रहे थे। उनके मुखमंडल पर मधुर मुस्कान, करुणा एवं दिव्य शांति का अद्भुत भाव झलक रहा था। श्रीराधा रानी सौम्य एवं करुणामयी स्वरूप में विराजमान थीं। उनका आशीर्वादमय हस्त भक्तों को कृपा, संरक्षण एवं प्रेम का संदेश प्रदान कर रहा था। उनके दिव्य वस्त्र, पुष्पमालाएं एवं अलंकार उनकी भव्यता को और अधिक निखार रहे थे।

बाल स्वरूप लड्डू गोपाल का मनोहारी श्रृंगार भी श्रद्धालुओं के आकर्षण का केंद्र रहा। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो वे अपनी मधुर बाल लीलाओं से भक्तों को आनंदित कर रहे हों।

इसी प्रकार भगवान श्रीनारायण एवं माता महालक्ष्मी का दिव्य स्वरूप भी श्रद्धालुओं को विशेष रूप से आकर्षित कर रहा था। भगवान नारायण पीताम्बर धारण कर धर्म, संरक्षण एवं लोककल्याण का संदेश दे रहे थे, वहीं माता महालक्ष्मी सुख, समृद्धि, वैभव एवं मंगल की अधिष्ठात्री देवी के रूप में भक्तों को आशीर्वाद प्रदान कर रही थीं। लक्ष्मी-नारायण की संयुक्त आराधना जीवन में धन के साथ सद्बुद्धि, संतुलन, शांति एवं आध्यात्मिक उन्नति प्रदान करने वाली मानी गई है।

मंदिर की संगमरमर निर्मित वेदी, सुंदर मेहराब, पुष्प सज्जा एवं प्रज्ज्वलित दीपकों से संपूर्ण वातावरण आध्यात्मिक ऊर्जा से ओत-प्रोत रहा। हरे पत्तों एवं रंग-बिरंगे पुष्पों से सुसज्जित दिव्य झांकी श्रद्धालुओं को वृंदावन धाम की पावन स्मृतियों का अनुभव करा रही थी।

धर्मग्रंथों के अनुसार अधिकमास में आने वाली परमा अथवा कमला एकादशी अत्यंत दुर्लभ एवं पुण्यदायी मानी जाती है। इस दिन भगवान श्रीहरि विष्णु एवं माता महालक्ष्मी की आराधना करने से जीवन में सुख, शांति, समृद्धि एवं आध्यात्मिक उन्नति की प्राप्ति होती है। व्रत, जप, दान, पूजन एवं सत्संग का विशेष महत्व बताया गया है। श्रद्धालुओं ने भगवान लक्ष्मी-नारायण एवं राधा-कृष्ण के दिव्य दर्शन कर कथा, पूजन, महाआरती एवं भजन-संध्या में सहभागिता करते हुए धर्मलाभ प्राप्त किया।

हेम्टू इंटक ने पोस्टर के माध्यम से उठाई भेल कर्मचारियों की समस्या...

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

बीएचईएल में कार्यरत वर्ल्ड स्टैन्डर्ड के कर्मचारियों के कठिन परिश्रम से वित्तीय वर्ष 2025-26 में बीएचईएल द्वारा रिकार्ड उत्पादन लक्ष्य हासिल किया गया है। लगभग 29 हजार करोड़ के ब्रेक इवन-प्वाईन्ट को पार करते हुए बीएचईएल ने 33782 करोड़ का टर्न ओव्हर हासिल किया है जो पिछले वित्तीय वर्ष से 19 प्रतिशत अधिक है वहीं इस वर्ष 1578 करोड़ का शुद्ध लाभ अर्जित किया गया है जो वित्तीय वर्ष 2024-25 से 208% अधिक है। बीएचईएल द्वारा हासिल की गई यह उपलब्धि समस्त कर्मचारियों के मेहनत, लगन एवं एकजुटता का परिणाम है हेम्टू इंटक यूनियन प्रबंधन को यह भरोसा दिलाती है कि सही प्लानिंग एवं मटेरियल की पूर्ण उपलब्धता रही तो बीएचईएल भोपाल का कर्मचारी वित्तीय वर्ष 2026-27 में रिकार्ड उत्पादन लक्ष्य भेदते हुए नया कीर्तिमान स्थापित करेगा।

बीएचईएल भोपाल कर्मचारियों के साथ सौतेला व्यवहार किया जा रहा है हेम्टू इंटक यूनियन के अथक प्रयासो से बीएचईएल भोपाल में 6 हजार रूपये रिवार्ड स्कीम का भुगतान होता था जिसे वर्ततान में मिनीमाईज कर रू. 3200/- पर लाकर खड़ा कर दिया गया है जबकि दूसरी यूनिटों में रिवार्ड स्कीम के साथ-साथ संडे ओव्हर टाईम का नगद भुगतान भी किया जा रहा है। स्कूल, अस्पताल एवं कैन्टीन की सब्सिडी में कटौती की जा रही है। वेलफेयर के नाम पर मिलने वाली समस्त सुविधाओं में कर्मचारियों को केवल निराशा ही हाथ लगी हैं। बीएचईएल भोपाल कर्मचारियों के कठिन परिश्रम को ध्यान में रखते हुए इन सभी विसंगतियों का निराकरण किया जाये।

प्रतिनिधि यूनियनों के चुनाव सम्पन्न हुए 4 वर्ष बीत चुके है इन 4 वर्षों में यूनियनों के आपसी खीचतान की वजह से कर्मचारियों के आर्थिक हितों में चौतरफा कटौती हो रही है चुनाव के बाद पीएमआर जैसी स्कीम कारखाने के लागू कर दी गयी हैं। कर्मचारियों को कैद करने का प्रयास किया जा रहा है। इन 4 वर्षों में नयी उपलब्धिया तो दूर की बात है कोरोना काल में जो व्यवस्था बंद हुई थी वह भी ठीक से चालू नहीं हो पा रही हैं। कैन्टीन में गिरती हुई भोजन की गुणवत्ता रोटी की घटिया क्वालिटी एवं आये दिन नाश्ते की समस्या से बीएचईएल का प्रत्येक कर्मचारी जूझ रहा है। बीते 4 वर्षों में अस्पताल की स्थिति भी वेन्टिलेटर पर आ गई हैं। वर्तमान समय में कर्मचारियों के अधिकारों के लिए दिखावें का नहीं जमीनी स्तर पर संघर्ष करने की आवश्यकता है।

हेम्टू इंटक बीएचईएल प्रबंधन से साफ शब्दों में यह कहना चाहती है की कर्मचारियों के लिए कोई भी लक्ष्य बड़ा नहीं है परन्तु उनके मनोबल को बनाये रखना प्रबंधन की पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। वित्तीय वर्ष 2026-27 के पहले तिमाही के आखिरी माह जून में 45 डिग्री तापमान पर कार्य करते हुए समस्त कर्मचारी लक्ष्य प्राप्ति हेतु संघर्षरत है परन्तु कर्मचारियों के ज्वलंत समस्याओं के निराकरण हेतु बुलाई जाने वाली जेसीएम की बैठक की तिथी का अता-पता नहीं हैं। अतः हेम्टू इंटक यूनियन बीएचईएल प्रबंधन से यह मांग करती है की अतिशीघ्र जेसीएम की बैठक बुलाकर कर्मचारियों की विभिन्न समस्याओं का निराकरण किया जाये अन्यथा हेम्टू इंटक यूनियन द्वारा जिस प्रकार दोनों बोनस का अलग-अलग भुगतान करने हेतु 3 जुलाई 2025 को 500 से अधिक कर्मचारियों के साथ 5 नं. गेट से 1 नं. गेट तक रैली निकाली गई थी। उसी पैटर्न पर कारखाने के अन्दर मार्च किया गया जायेगा एवं हेम्टू इंटक उग्र आंदोलन के लिये बाध्य होगा।

अचारपुरा में अवैध खनन, जांच के आदेश

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

भोपाल के अचारपुरा के डोबरा रोड स्थित कुठार की चंदेरी झील में जल गंगा संवर्धन अभियान के नाम पर अवैध उत्खनन का मामला सामने आया है। आरोपों के बाद एडीएम सुमित पांडे ने जिला खनिज अधिकारी से रिपोर्ट तलब की है। शिकायत में आरोप है कि झील से करीब 150 डंपर कोपरा निकालकर बिना रॉयल्टी बेचा गया। जानकारी के अनुसार, कुठार के सरपंच पति गिरजेश ने खुदाई का काम जिला खनिज अधिकारी एलएम गोयल के बेटे शुभम गोयल को सौंपा था। प्रारंभ में मिट्टी निकाली गई, लेकिन बाद में कोपरा निकाले जाने की शिकायत सामने आई है। अब यह जांच की जाएगी कि निकाला गया कोपरा कहां और किसे बेचा गया। एडीएम ने बताया कि कोपरे के उत्खनन और बिक्री की जांच के निर्देश जिला खनिज अधिकारी एमएस रावत को दिए गए हैं। जिले में पिछले एक महीने से तालाबों और नदियों के गहरीकरण का काम चल रहा है। आरोप हैं कि कई स्थानों पर अभियान की आड़ में रेत, मुरम और कोपरा निकालकर बेचा जा रहा है।

कुंकुमार्चन और पर्यावरण संरक्षण के संग मिला संस्कृति संवर्धन का संदेश

नई पीढ़ी को धर्म और संस्कारों से जोड़ना समय की आवश्यकता : पूनम कुलकर्णी

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

सनातन परंपरा में विशेष महत्व रखने वाले पुरुषोत्तम मास (अधिक मास) के पावन अवसर पर कोलार स्थित श्री अथर्वशीर्ष मंडल द्वारा पूरे माह विविध धार्मिक एवं आध्यात्मिक आयोजनों का संकल्प लेकर समाज में भक्ति, संस्कार और सामाजिक एकता का प्रेरणादायक संदेश दिया गया। इस अवसर पर महाराष्ट्रीयन समाज के परिवारों, महिलाओं, युवाओं एवं बच्चों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता कर धार्मिक अनुष्ठानों का लाभ प्राप्त किया।

माहभर चले कार्यक्रमों का शुभारंभ 17 मई को सामूहिक विष्णु पवमान अभिषेक से हुआ। दिलीप कुलकर्णी, श्रीकृष्ण आठले, अब श्री पटवर्धन के आचार्यत्व में सम्पन्न इस आयोजन में 25 दम्पत्तियों ने भाग लेकर भगवान विष्णु का अभिषेक एवं पूजन किया। कार्यक्रम के संयोजक अमृत हलवे एवं पं. नितीन अवसरकर द्वारा निःशुल्क पूजन सामग्री तथा महाप्रसाद की व्यवस्था की गई। इसी अवसर पर साहित्य क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए साहित्य संग महामंडल के उपाध्यक्ष पुरुषोत्तम स्प्रे का सम्मान भी किया गया।

22 मई को महिलाओं द्वारा सामूहिक कुंकुमार्चन का आयोजन किया गया, जिसमें 25 महिलाओं ने माता महालक्ष्मी की आराधना कर परिवार की सुख-समृद्धि एवं मंगलकामना की। कार्यक्रम का सफल संचालन पूनम कुलकर्णी के संयोजन में हुआ।

28 मई को सामूहिक सत्यनारायण भगवान कथा एवं पूजन का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें 35 दम्पत्तियों ने सहभागिता की। वैदिक विधि-विधान से सम्पन्न इस आयोजन का संचालन गुरुजी अमित अभ्यंकर एवं पं. नितीन अवसरकर ने किया। इसी अवसर पर परशुराम बोर्ड के अध्यक्ष विष्णु राजोरिया का सम्मान भी किया गया।

29 मई को राजश्री वालवेकर के निवास पर 35 महिलाओं द्वारा सामूहिक कुंकुमार्चन आयोजित किया गया। इसके पश्चात 3 जून को संकष्ट चतुर्थी के अवसर पर माधव जोशी के निवास पर सभी सदस्यों ने सामूहिक रूप से अथर्वशीर्ष पाठ का सहस्रावर्तन कर आध्यात्मिक वातावरण निर्मित किया।

विश्व पर्यावरण दिवस एवं अधिक मास के विशेष संयोग पर 5 जून को जानकी अपार्टमेंट परिसर में श्री अथर्वशीर्ष मंडल एवं श्रीरंग नृत्यालय के संयुक्त तत्वावधान में सामूहिक कुंकुमार्चन का आयोजन श्रद्धा एवं भक्ति भाव के साथ सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में 35 महिलाओं एवं छात्राओं ने भाग लिया। मुख्य अतिथि बृहन्महाराष्ट्र मंडल की राष्ट्रीय सचिव पूनम कुलकर्णी ने इस अवसर पर बृहन्महाराष्ट्र मंडल की राष्ट्रीय सचिव पूनम कुलकर्णी ने कहा कि भारतीय संस्कृति और सनातन परंपराएं केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे परिवार, समाज और राष्ट्र को जोड़ने का सशक्त माध्यम हैं। उन्होंने कहा कि आज की पीढ़ी को आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ अपने धर्म, संस्कृति और संस्कारों की भी जानकारी होना आवश्यक है। यदि बच्चे बचपन से ही परिवार के साथ पूजा-पाठ, धार्मिक आयोजनों और सामाजिक गतिविधियों में सहभागी बनेंगे तो उनमें नैतिक मूल्यों, अनुशासन और पाबरिवारिक जिम्मेदारियों का विकास होगा।

पूनम कुलकर्णी ने कहा कि अधिक मास जैसे आध्यात्मिक अवसर हमें आत्मचिंतन, सेवा, भक्ति और सामाजिक समरसता का संदेश देते हैं। ऐसे आयोजन समाज को एकजुट करते हैं तथा नई पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़ने का कार्य करते हैं। पूनम कुलकर्णी ने महिलाओं की सक्रिय भागीदारी की सराहना करते हुए कहा कि परिवार और संस्कृति के संरक्षण में मातृशक्ति की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है।

श्रीरंग नृत्यालय कल्चरल एवं वेलफेयर सोसाइटी की संचालिका मांडवी आरोणकर ने पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए महिलाओं को तुलसी के पौधे वितरित किए तथा वृक्षारोपण एवं प्रकृति संरक्षण का संकल्प दिलाया। उन्होंने कहा कि धार्मिक आस्था और पर्यावरण संरक्षण दोनों मिलकर मानव जीवन को संतुलित एवं समृद्ध बनाते हैं। मंडल के पदाधिकारियों ने बताया कि पुरुषोत्तम मास के दौरान प्रत्येक शुक्रवार सामूहिक कुंकुमार्चन का संकल्प लिया गया है। इसी श्रृंखला का अगला आयोजन 12 जून को आयोजित होगा।

कड़ी धूप में भी डटे कर्मचारी, भेल गेट पर सीटू यूनियन की जोरदार द्वार सभा

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

भेल भोपाल में कर्मचारियों की ज्वलंत मांगों को लेकर भेक्टू-सीटू यूनियन का चरणबद्ध आंदोलन पिछले डेढ़ महीने से लगातार जारी है। प्लांट परफॉर्मेंस बोनस, इंसेंटिव, लैपटॉप प्रतिपूर्ति, अनुकंपा नियुक्ति सहित विभिन्न मांगों को लेकर चल रहे इस आंदोलन के तहत आज भेल के गेट पर आयोजित द्वार सभा में सीटू यूनियन के पदाधिकारी और कार्यकर्ताओं ने जोरदार तरीके से अपनी आवाज बुलंद की।

कड़ी धूप के बावजूद सैकड़ों की संख्या में उपस्थित कर्मचारियों ने सभा को सफल बनाया और प्रबंधन के खिलाफ अपना आक्रोश व्यक्त किया। इस दौरान यूनियन नेताओं ने स्पष्ट शब्दों में चेतावनी दी कि यदि जल्द ही मांगों का समाधान नहीं किया गया तो आंदोलन को और तेज किया जाएगा।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सीटू यूनियन के अध्यक्ष लोकेन्द्र सिंह शेखावत ने कहा कि जब तक सीटू यूनियन भेल कारखाने में मौजूद है, तब तक कर्मचारियों के किसी भी अधिकार को प्रबंधन दबा नहीं सकता। उन्होंने कहा कि यूनियन कर्मचारियों के हक की लड़ाई अंत तक लड़ती रहेगी और मांगें पूरी होने तक संघर्ष जारी रहेगा।

यूनियन के कार्यकारी महामंत्री दीपक गुप्ता ने अपने संबोधन में कहा कि भेल प्रबंधन कर्मचारियों की मांगों को लेकर गंभीर नजर नहीं आ रहा है। उन्होंने कहा कि कर्मचारियों की कड़ी मेहनत के कारण ही कारखाना लगभग 2200 करोड़ रुपये के मुनाफे में पहुंचा है, लेकिन अब जब कर्मचारियों को उनका हक देने का समय आया है, तो प्रबंधन टालमटोल कर रहा है। उन्होंने मांग की कि प्रबंधन शीघ्र ही जेसीएम बैठक बुलाकर प्लांट परफॉर्मेंस बोनस एवं अन्य लंबित मांगों का समाधान करे।

यूनियन के कोषाध्यक्ष शाहिद अली ने कहा कि वेज रिवीजन भी इस वर्ष दिसंबर माह में देय है, इसलिए नई वेज रिवीजन के लिए शीघ्र कमेटी गठित की जानी चाहिए।

कार्यक्रम का संचालन यूनियन के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री सादिक खान द्वारा किया गया। वहीं, इस भीषण गर्मी में बड़ी संख्या में उपस्थित होकर द्वार सभा को सफल बनाने के लिए भेल कर्मचारियों का आभार उपाध्यक्ष विनय सिंह ने व्यक्त किया।

यूनियन ने एक बार फिर दोहराया कि यदि जल्द ही कर्मचारियों की जायज मांगों पर सकारात्मक निर्णय नहींलिया गया, तो आंदोलन को और व्यापक रूप दिया जाएगा।

आज की विशाल सभा में यूनियन के पदाधिकारी गण श्री अशोक पटेल,कुलदीप मौर्य,गोपाल गुप्ता, दुर्ग सिंह मरावी, कौशल किशोर वामने,राजू आमों विजय तिवारी, सतीश दास ,शमीम खान, डमरू धर पिंग, सतेंद्र सिंह ठाकुर,नितिन अकोदिया, राजेश रजक, राकेश वर्मा, राजेंद्र पारखी, राम प्यारे,राहुल घासले,लक्ष्मण सिंह तोमर, रवि सोलंकी सहित सैकड़ों कार्यकर्ता गण उपस्थित हुए,

छोटी-सी खिड़की है!

वित्त मंत्रालय के मुताबिक तीन कारणों से दुनिया नया आकार ले रही है: महाशक्तियों में प्रतिस्पर्धा, पश्चिमी गठबंधन में दरार, और मैनुफैक्चरिंग में चीन का वर्चस्व। इसके अनुरूप ढलने के लिए भारत के पास बहुत कम वक्त है।

बढ़ती आर्थिक चुनौतियों के बीच वैश्विक आपूर्ति शृंखला में आए बदलावों से तालमेल बनाने के लिए भारत के पास "एक बहुत छोटी खिड़की" मौजूद है। यह बात केंद्रीय वित्त मंत्रालय ने स्थायी संसदीय समिति के सामने कही। बताया गया कि चीन ने अपने नए कानून के तहत वहां स्थित आपूर्ति शृंखला को बाधित कर दिया है। वहां से अपने कारखाने हटाने वाली कंपनियों को वह दंडित कर रहा है। इससे भारत में मैनुफैक्चरिंग को बढ़ावा देने के लिए अपनाई गई नीति के सामने मुश्किलें खड़ी हुई हैं। वित्त मंत्रालय ने कहा कि इस समय ये तीन परिघटनाएं दुनिया को नया आकार दे रही है: बड़ी ताकतों में प्रतिस्पर्धा, पश्चिमी गठबंधन में दरार, और मैनुफैक्चरिंग में चीन का प्रभुत्व।

मंत्रालय ने कहा कि इन परिवर्तनों पर भारत को अधिक फुर्तीला और रणनीतिक प्रतिक्रिया दिखानी होगी। ऐसा करने के लिए देश के पास 'बहुत छोटा अवसर' है। मंत्रालय ने कहा कि महाशक्तियों की प्रतिस्पर्धा के तहत व्यापार, तकनीक, और वित्त का उपयोग सामान्य लाभ उठाने के बजाय रणनीतिक हितों के मुताबिक किया जा रहा है। इसी क्रम में चीन ने अपने यहां से कारखाना, तकनीक, या विशेषज्ञों को दूसरे देशों में- खासकर भारत ले जाने की राह में कानूनी रुकावट खड़ी कर दी है। भारत में साझा उद्यम या देशी निवेश के तहत लगाए जा रहे कारखानों की इन मामलों में चीन पर निर्भरता रही है। स्पष्टतः ये दोनों परिघटनाएं भारत के लिए चुनौती बनकर आई हैं। हालांकि यूरोप और अमेरिका के बीच पड़ती दरार को वित्त मंत्रालय ने भारत के लिए अवसर के रूप में देखा है, मगर इसका लाभ उठाने के लिए तुरंत खुद को तैयार करने की चुनौती उसके सामने है। मंत्रालय ने माना कि इसके लिए ज्यादा वक्त नहीं है। कहा जा सकता है कि वित्त मंत्रालय को बदल रही दुनिया का सही अहसास है। मगर, नई परिस्थितियों के मुताबिक नजरिए एवं नीतियों में जिस तरह के आमूल परिवर्तन की जरूरत है, उसकी समझ का संकेत उसने नहीं दिया है। क्या बिना घरेलू बाजार के विस्तार पर ध्यान केंद्रित किए, नए बाहरी हालात का मुकाबला किया जा सकता है- यह बुनियादी सवाल है।

नेहरू के रिकॉर्ड तोड़ने की मुहिम!

ऐसा लग रहा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू के रिकॉर्ड तोड़ने की मुहिम में लगे हैं। 2024 में जब वे लगातार तीसरी बार लोकसभा का चुनाव जीत कर प्रधानमंत्री बने तो नेहरू के रिकॉर्ड की बराबरी की। अभी तक नेहरू अकेले प्रधानमंत्री थे, जो लगातार तीन बार चुनाव जीते थे। उससे पहले मोदी ने लगातार सबसे लंबे समय तक प्रधानमंत्री रहने के मामले में इंदिरा गांधी का रिकॉर्ड तोड़ा था। अब वे लगातार सबसे लंबे समय तक चुना हुआ प्रधानमंत्री रहने का जवाहर लाल नेहरू का रिकॉर्ड तोड़ने जा रहे हैं।

बुधवार, 10 जून को यह रिकॉर्ड मोदी के नाम हो जाएगा। वे लगातार 4,399 दिन प्रधानमंत्री रह कर नेहरू का रिकॉर्ड तोड़ेंगे। सवाल है कि इसके बाद क्या? इसके बाद भी नेहरू का एक रिकॉर्ड है। ले भले 1952 में पहली बार चुने हुए प्रधानमंत्री बने थे लेकिन उससे पहले 1947 से 1952 तक वे मनोनीत प्रधानमंत्री थे। इस रिक़ॉर्ड को तोड़ने के लिए मोदी को करीब छह साल और प्रधानमंत्री रहना होगा। नेहरू लगातार 6,130 दिन तक प्रधानमंत्री रहे थे। इसका मतलब है कि मोदी को 2029 का चुनाव जीत कर कम से कम तीन सौ तक यानी 2032 तक प्रधानमंत्री रहना होगा। उस समय तक मोदी की उम्र 81 साल से ऊपर होगी।

जीडीपी के आंकड़े ध्यान से देखने की जरुरत!

पिछले वित्त वर्ष 2025-26 के सकल घरेलू उत्पाद यानी जीडीपी के आंकड़े बहुत अच्छे रहे। देश की अर्थव्यस्था 7.7 फीसदी की रफ्तार से बढ़ी। वित्त वर्ष की आखिरी तिमाही यानी जनवरी से मार्च के महीने में विकास की दर 7.8 फीसदी रही। ध्यान रह इस तिमाही का आखिरी महीना यानी मार्च का महीना पश्चिम एशिया की जंग वाला था। अमेरिका और इजराइल ने 28 फरवरी को ईरान के ऊपर हमला किया था और पूरे मार्च महीने में भीषण जंग चल रही थी। मार्च के महीने में होर्मुज की खाड़ी पूरी तरह से बंद थी, जिसकी वजह से भारत को कच्चा तेल और अपनी ऊर्जा जरुरत पूरा करने के लिए बड़ी मशक्कत करनी पड़ रही थी। गैस की आपूर्ति खासतौर से प्रभावित हुई थी, जिसका असर आर्थिक गतिविधियों पर पड़ा। फिर भी 7.8 फीसदी की विकास दर काफी प्रभावशाली कही जाएगी। तभी सवाल है कि क्या जीडीपी के 7.7 फीसदी के आंकड़े या आखिरी तिमाही के 7.8 फीसदी के आंकड़ों पर जैसी वाहवाही की जा रही है और साबित किया जा रहा है कि जैसे देश के सामने कोई आर्थिक संकट नहीं है, उसे सही माना जा सकता है? इन आंकड़ों से राजनीतिक नैरेटिव बनाने या उसे प्रभावित करने की कोशिश करना अपनी जगह है। मीडिया की ओर से इसकी तरह तरह की व्याख्या की जा रही है और अर्थव्यवस्था की स्थिति पर सवाल उठाने वालों का मजाक बनाया जा रहा है। वह भी अपनी जगह है। लेकिन उम्मीद करनी चाहिए कि देश के नीति नियंता इस ट्रैप में नहीं फंसेंगे और भले कुछ भी कह रहे हों वास्तविक स्थिति को वस्तुनिष्ठ ढंग से देख रहे होंगे। अगर जीडीपी के इस आंकड़े को ही बारीकी से देखेंगे तो कोई चीजें स्पष्ट हो जाएंगी।

जिस दिन भारत सरकार के सांख्यिकी विभाग ने जीडीपी के आंकड़े जारी किए उसी दिन भारतीय रिजर्व बैंक ने चालू वित्त वर्ष यानी 2026-27 के लिए विकास दर का अनुमान भी जारी किया। इसमें कहा गया कि चालू वित्त वर्ष में भारत की जीडीपी 6.6 फीसदी की रफ्तार से बढ़ेगी। कई दूसरी संस्थाएं इससे भी कम विकास दर रहने का अनुमान जता रही हैं। फिंच ने 6.4 फीसदी की विकास दर का अनुमान लगाया है। लेकिन अगर रिजर्व बैंक के अनुमान को ही मानें तो विकास दर में पिछले साल के मुकाबले इस साल 1.1 फीसदी की कमी आएगी। अगर भारत की अर्थव्यवस्था चार सौ लाख करोड़ रुपए की ही रहती है तब भी इस आंकड़े हिसाब से चार लाख 40 हजार करोड़ रुपए का कम उत्पादन होगा।

सोचें, यह कितनी बड़ी रकम है। भारत सरकार की मुफ्त अनाज बांटने जैसी कई लोक कल्याण की योजनाओं का बजट साढ़े तीन लाख करोड़ रुपए से कुछ ज्यादा है। यानी उससे ज्यादा की कमी आएगी भारत के सकल घरेलू उत्पादन में। बिहार जैसे बड़े राज्य का सालाना बजट सवा तीन लाख करोड़ रुपए का है। उससे ज्यादा की कमी देश की जीडीपी में आ सकती है। ध्यान रहे कोरोना महामारी के समय मनमोहन सिंह ने दो फीसदी कमी का अनुमान लगाया था, जो सही साबित हआ था और देश को उससे उबरने में कितना समय लगा था यह सब जानते हैं।

अगर पिछले साल के आंकड़ों को भी थोड़ी बारीकी से पढ़ेंगे तो खतरे का संकेत मिलेगा। बताया गया है कि आखिरी तिमाही में विकास दर 7.8 फीसदी रही और इसके आधार पर यह धारणा बनाई गई जैसे भारत की अर्थव्यवस्था पर युद्ध का कोई असर नहीं हुआ। लेकिन ऐसा नहीं है। एक महीने के युद्ध का असर यह हुआ कि भारत की अर्थव्यवस्था अनुमान से कम हो गई। ध्यान रहे उससे पहले वाली तिमाही यानी अक्टूबर से दिसंबर 2025 में विकास दर 8.1 फीसदी रही थी और जनवरी से मार्च का अनुमान भी आठ फीसदी का था। लेकिन वास्तव में जीडीपी बढ़ी 7.8 की रफ्तार से।

इसका अर्थ है कि अनुमान से 0.2 फीसदी और उससे पहले वाली तिमाही से 0.3 फीसदी कम रही जीडीपी बढ़ने की रफ्तार। यह भी ध्यान रखने की बात है कि मार्च का महीना होने के बावजूद ये कमी रही। ध्यान रहे मार्च में क्लीयरिंग होती है, जिससे अर्थव्यवस्था के आंकड़े हमेश ऊंचे रहते हैं। मार्च में भारत सरकार को जीएसटी के मद में अब तक का रिकॉर्ड 2.87 लाख करोड़ रुपए की कमाई हुई थी फिर भी उस तिमाही की जीडीपी सरकारी अनुमान से और पिछली तिमाही से कम रही।

इसी तरह इन आंकड़ों में चिंता की दूसरी बात यह है कि कृषि सेक्टर की विकास दर 4.3 से घट कर 3.5 फीसदी पर आ गया। इस साल सुपर अल नीनो की आशंका को देखते हुए यह चिंता बहुत बड़ी है। ध्यान रहे पिछले साल मानसून सामान्य से बेहतर रहा था। दक्षिण पश्चिम मानसून के समय बारिश 108 फीसदी हुई थी। इसके बावजूद अगर कृषि उत्पादन में कमी आई तो सोच सकते हैं कि इस साल जब सामान्य से कम बारिश की आशंका जताई जा रही है तो क्या हो सकता है। इस साल मौसम विभाग ने 90 फीसदी बारिश की संभावना जताई है।

इसका असर इस साल खरीफ से लेकर अगले साल रबी की फसल पर पड़ेगी। अगर इसमें युद्ध के असर को जोड़ दें तो ज्यादा गंभीर तस्वीर उभरती है

ध्यान रहे युद्ध की वजह से डीजल की कीमत तो बढ़ी है साथ ही रासायनिक खाद की कीमतों में बड़ी बढ़ोतरी हुई है। उपलब्धता कम है वह अपनी जगह है। ऐसे में देश में सबसे ज्यादा रोजगार देने वाले सेक्टर में सुस्ती आती है तो उसका असर बड़ा हो सकता है। वैसे भी जीडीपी और जीवीए यानी ग्रॉस वैल्यू एडेड दोनों में कृषि का हिस्सा 20 फीसदी से काफी कम हो गया है और सेवा क्षेत्र का हिस्सा 54 फीसदी के करीब पहुंच गया है। एक रिपोर्ट के मुताबिक वैश्विक बाजार में उर्वरक की कीमतें दोगुनी हुई हैं, जिससे भारत की उर्वरक सब्सिडी इस साल दोगुनी हो सकती है। पिछले साल 1.70 लाख करोड़ रुपए की सब्सिडी थी, जो इस साल 3.40 लाख करोड़ की हो सकती है। बाकी शेयर बाजार, मुद्रा बाजार, मुद्रास्फीति, विदेशी निवेश, व्यापार घाटा आदि की जो स्थिति है वह बड़े खतरे का संकेत है। इन वास्तविकताओं को ध्यान में रख कर आर्थिक बंदोबस्त करने की आवश्यकता है।

-अजीत द्विवेदी

खामोश साइकिल, खोती मासूमियत!

बचपन की यादों के किसी कोने में आज भी वह एक दृश्य ठहरा हुआ है- गांव की चौहद्दी पर लगे मेले की धूल, तपती गर्मी और उस सबके बीच से गुजरती एक पुरानी, चरमराती साइकिल। उस साइकिल के पीछे कैरियर पर बंधी एक बांस की खपच्ची, जिसमें खोंसे हुए रंग-बिरंगे भोंपू, प्लास्टिक की गुड़िया, टिक-टिक करती तीतर-बटेर वाली गाड़ियां और हवा में लहराती लाल-पीली पन्नियों की फिरफिरियां। वह महज खिलौने बेचने वाला नहीं था, वह सीधे अपनी पीठ पर खुशियों का पूरा का पूरा संसार लादे चला आता था। उसकी साइकिल की घंटी बजती थी, तो लगता था जैसे पूरे मोहल्ले के बच्चों के फेफड़ों में नई हवा भर गई हो। आज लगता है कि हम सब बड़े क्या हुए, उस साइकिल वाले की पूरी दुनिया ही कहीं खो गई। अब न वह घंटी सुनाई देती है, न मेले की उस धूल में वह जानी-पहचानी सूरत दिखाई देती है। ऐसा लगता है कि वक्त की तेज रफ्तार ने उस गरीब के पैरों के पैडल ही छीन लिए हैं। ऑनलाइन खरीदारी वाले इस नए जमाने में उस गरीब फेरीवाले की पोटली अब कबाड़ का ढेर लगने लगी है। वह हर सुबह उठकर अपनी साइकिल की उतरी हुई चेन चढ़ाता है, जी-तोड़ पैडल मारता है, पर कमबख्त वक्त का पहिया उससे बहुत आगे निकल चुका है। बाजार के इस चमचमाते मलबे के नीचे उसकी उम्मीदें और छोटा-सा हुनर घुटकर दम तोड़ चुके हैं। लोग सच ही कहते हैं कि भूखे भजन न होय गोपाला,

पर यहां तो पूरी जिंदगी ही भूख का अंतहीन भजन बन गई है। यह सोच कर किसी का भी कलेजा फट जाए कि जो शख्स दूसरों के बच्चों के होठों पर चंद रुपयों में मुस्कान बिखेरने की जिद में अपनी एड़ियां घिस देता है, उसके अपने मासूम बच्चे रात को अक्सर भूखे पेट, रोते हुए सो जाते हैं। उसकी उस फटी कमीज के मैल और पसीने की गंध में ईमानदारी की आखिरी गवाही बची है, जिसे यह बेरहम दुनिया देखना ही नहीं चाहती। मेले का मतलब कभी होता था रिश्तों का मिलना, खुशियों का साझा होना, लेकिन अब मेले भी कॉरपोरेट हो गए हैं। बड़े-बड़े पंडाल, टिकट वाले झूले और वीआईपी पास के बीच उस साइकिल वाले को बाहर से ही खदेड़ दिया जाता है। डांट सुन कर सिर्फ उसकी साइकिल पीछे नहीं हटती, बल्कि उसका आत्मसम्मान भीतर तक लहूलुहान हो जाता है। वह अपनी ढीली पड़ चुकी चप्पल को घसीटता हुआ, सिर झुकाए किसी पेड़ की छांव में जा खड़ा होता है। उसकी वह लाचारी, उसका वह मौन विलाप देखकर आसमान का कलेजा भी कांप उठता होगा। उसने कभी किसी से भीख नहीं मांगी, उसने तो बस अपने पसीने की बूंदों से खिलौने सींचे थे, पर इस बेरहम दुनिया ने उसे उसकी ईमानदारी का यही सिला दिया। ऐसा लगता है कि वह सिर्फ एक खिलौने बेचने वाला नहीं, बल्कि हमारी गुजर चुकी मासूमियत का आखिरी कफन है, जो धीरे-धीरे मैला हो रहा है। हम जितने आधुनिक हो रहे हैं, उतने ही कसाई होते जा रहे हैं। हमें तरस आता है भूखे जानवरों पर, हम सोशल मीडिया पर संवेदनाओं के समंदर बहा देते हैं, पर सामने खड़े उस जीते-जागते मरते हुए इंसान की सिसकी हमारे कानों तक नहीं पहुंचती। उसकी साइकिल का वह जर्जर ढांचा, जिसका हैंडल अब मुड़ चुका है और जिसकी गद्दी फटकर रुई उगल रही है, ठीक उसकी जिंदगी का आईना है। वह हर रोज सुबह एक नई जंग के लिए निकलता है, यह जानते हुए भी कि इस बाजार में उसकी हार पहले से ही तय है। अब तो गलियों में उसकी आवाज भी जैसे घुटकर रह गई है। पहले उसकी एक हांक पर पूरा मोहल्ला जीवंत हो उठता था! अब उसकी आवाज कलाई घड़ियों के अलार्म और मोबाइल की रील के शोर में कहीं दफ्न हो गई है। लोग अपने घरों के ऊंचे दरवाजे और खिड़कियां बंद कर लेते हैं, ताकि बाहर की धूल और वह दरिद्रता भीतर न आ सके। वह बंद दरवाजों को देखता है, अपनी सूखी जीभ से होठों को चाटता है और बिना कुछ कहे आगे बढ़ जाता है। उसकी पीठ झुक गई है, बाल समय से पहले सफेद हो गए हैं और हाथों की नसें इस तरह उभर आई हैं जैसे कोई सूखा हुआ दरख्त हो। वह एक जीता-जागता भूत बन चुका है, जो इंसानों की बस्ती में अपनी खोई हुई जिंदगी ढूंढ रहा है। मन के विचार और कर्मों का फर्क समझिए, हर दिखने वाली चीज का मतलब गलत नहीं होता | दुनिया मेरे आगे आखिर में जब वह इतिहास के पन्नों से पूरी तरह गायब हो जाएगा, तब शायद हम उसे याद करें, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी होगी। हमने अपनी तरक्की की वेदी पर एक बेहद मासूम और ईमानदार वजूद की बलि चढ़ा दी होगी। जब भी कभी किसी पुरानी अलमारी से वह धूल खाती हुई प्लास्टिक की फिरफिरी मिले, तो यह सोचने की जरूरत है कि इसे बेचने वाले के घर में उस दिन दीया जला था या नहीं। वह साइकिल वाला कोई कहानी का पात्र नहीं है, वह हमारी आंखों के सामने दम तोड़ती हुई एक संस्कृति है, जिसकी मौत पर न कोई मातम मनेगा, न कोई आंसू बहाएगा। बस, हवा में उसकी साइकिल की वह आखिरी घंटी कहीं गूंजकर हमेशा-हमेशा के लिए खामोश हो जाएगी और हम अपनी सजी-धजी दुनिया में मगन रहेंगे, यह भूलकर कि किसी का पूरा वजूद हमारी बेरुखी की भेंट चढ़ गया।

देश जिसे विरोध करना भुला दिया गया!

छह जून की सुबह जंतर-मंतर पर कॉकरोच जनता पार्टी की एक मामूली-सी भीड़ जमा हुई। इसकी मांग शिक्षा मंत्री के इस्तीफे की थी। यूट्यूबर अपने फोन हाथ की दूरी पर पकड़े हुए थे, अपने पीछे खड़े लोगों को फ्रेम में लेकर खुद को रिकॉर्ड कर रहे थे। कई छात्र किनारों पर खड़े तमाशबीन थे। उन्हें खुद नहीं मालूम था कि करना क्या है, नारे क्या लगाने हैं। कुछ लोग फूल लेकर आए थे। कुछ मास्क पहने हुए थे और गर्मी में खुद को हवा कर रहे थे। कुछ ने कॉकरोच का मुखौटा पहना और खुद को गाता हुआ कॉकरोच बता रहे थे। बंद जगह का बंद माहौल उमस भरा, थका हुआ और बेचैन था। दोपहर तक थकान विरोध पर हावी हो गई। फिर प्रदर्शन समाप्त हुआ। मांग रखी गई। पर कुछ नहीं बदला। आज तक कुछ नहीं बदला। यह उस प्रदर्शन की कहानी नहीं है। यह उस सवाल की कहानी है कि भला प्रदर्शन वैसा दिखा क्यों? किसी ने भी उसकी वजह को क्षण भर के लिए गंभीरता से लिया? बारह वर्ष पहले भारत में विरोध सार्वजनिक जीवन की एक स्वाभाविक विशेषता था। जंतर-मंतर तख्तियों, नारों और बेचैन ऊर्जा से भरा रहता था। देश के दूसरे हिस्सों में मैदान, विश्वविद्यालय परिसर और शहरों के चौक भी वैसी ही मन:स्थिति में अपनी बात, अपना विरोध किए रहते थे। आरक्षण, महंगाई, भ्रष्टाचार, निर्भया, भूमि अधिग्रहण, लोकपाल—एक के बाद एक जन आंदोलनों की लहरें उठती थीं। हर आंदोलन सफल नहीं हुआ। हर मांग सही नहीं थी। लेकिन वे सब मिलकर लोकतंत्र को स्वयं से संवादरत रखते थे। लोकतंत्र जिंदादिल था। स्वतंत्र भारत हमेशा से सड़क भरना जानता था। उससे पहले भारत का स्वतंत्रता आंदोलन भी सार्वजनिक स्थानों पर एकत्रित लोगों की शक्ति पर खड़ा था—बारडोली में, नागपुर में, पुराने शहरों की गलियों में और मैदानों की धूल में। आजादी के बाद वह सिलसिला समाप्त नहीं हुआ। बल्कि गणराज्य ने विरोध को लोकतांत्रिक प्रतिक्रिया के रूप में सामान्य बनाया। 1950 के दशक के भूमि सुधार आंदोलन, भाषाई आंदोलन जिन्होंने राज्यों की सीमाएं बदलीं, 1974 की रेल हड़ताल जिसने तीन सप्ताह तक देश को लगभग ठप कर दिया, गुजरात का नवनिर्माण आंदोलन जिसने एक मुख्यमंत्री को हटाया, और उसके बाद का जेपी आंदोलन जिसने अंततः एक प्रधानमंत्री की सत्ता, कांग्रेस को हटाकर दिल्ली में गैर-कांग्रेस सरकार बनवाई। ये विनम्र नागरिक अभ्यास नहीं थे। कुछ विघटनकारी थे, कभी-कभी हिंसक भी, और केंद्र सरकारों के लिए अक्सर असुविधाजनक। लेकिन जनता

आंदोलनों से चेतना पाती थी। वह राजनीतिक शिक्षा थी, सत्ता से नागरिकों का संवाद भी था। तब भारतीय समझ में लोकतंत्र केवल चुनावों की प्रक्रिया नहीं था। वह शासित और शासक के बीच चलने वाली सतत बातचीत थी। अदालतों में, विधानसभाओं में और सबसे बढ़कर आंदोलन के रूप में सड़क पर। 1975 का आपातकाल इस सत्य को अनुपस्थिति के माध्यम से सिद्ध करता है। इंदिरा गांधी ने आपातकाल में सड़कों पर चुप्पी बनवा दी थी। विरोध प्रदर्शन प्रतिबंधित हुए, नेता जेल भेजे गए, प्रेस पर सेंसरशिप लागू हुई। परिणाम क्या हुआ? परिणाम दबाव का ऐसा प्रेसर कूकर साबित हुआ, जो एक बंद कक्ष की वोट प्रतिहिंसा में प्रकट हुआ और ज्यों ही 1977 में सड़क को वापस बोलने दिया गया तो उसकी आवाज इतनी तीखी थी कि दशकों से चली आ रही परिवार, सर्वाधिक पुरानी पार्टी की पक्की स्थापित सत्ता एक ही चुनाव में भरभरा कर गिर गई। 1975 में जो विरोध से गुल नहीं खिला, वह 1977 में मतपेटी से प्रकट हुआ। सबक स्पष्ट था—असहमति को दबाने से वह समाप्त नहीं होती, वह चुपचाप सघन और बढ़ती जाती है। लगता है वह इतिहास, वह सबक भुला दिया गया है। पिछले बारह वर्षों में विरोध प्रदर्शन कम हुए हैं। इसलिए नहीं कि शिकायतें या असंतोष समाप्त हो गए हैं। बेरोजगारी, महंगाई, परीक्षा-पत्र लीक, असमानता—सभी पुराने प्रश्न अभी भी मौजूद हैं। लेकिन सड़कें पहले की तुलना में अधिक शांत हैं। समस्याओं, शिकायतों की कमी नहीं है। मगर समस्या-शिकायतों के सार्वजनिक रूप, उसकी आवाज, गूंज की कमी है। 2019 और 2020 के नागरिकता संशोधन कानून विरोध प्रदर्शनों ने आपातकाल विरोधी दौर के बाद सबसे बड़ी भीड़ जुटाई। लखनऊ, कोलकाता, चेन्नई और मुंबई की सड़कों पर लाखों लोग उतरे। शाहीन बाग कुछ समय के लिए पूरी दुनिया में चर्चा का विषय बना। वहां अधिकतर मुस्लिम महिलाएं, जिनमें अनेक बुजुर्ग थीं, दिल्ली की सर्दी में सड़क पर बैठीं और संविधान की प्रतियां हाथों में थामे रहीं। उन्हें महसूस कराया गया था कि शायद वही संविधान अब उन पर लागू नहीं होता। 2020 और 2021 में किसानों ने दिल्ली की सीमाओं पर एक वर्ष से अधिक समय तक डेरा डाले रखा। यह स्वतंत्र भारत के इतिहास के सबसे लंबे और सबसे टिकाऊ आंदोलनों में से एक था। वे अपने खेतों से सैकड़ों किलोमीटर दूर थे। सर्दी में, गर्मी में, बारिश में। वे केवल एक लोकतांत्रिक मांग कर रहे थे। लेकिन शाहीन बाग की महिलाएं मुख्यधारा के राजनीतिक आख्यान में संविधान का प्रयोग करती नागरिक नहीं थीं। उन्हें ट्रैफिक की समस्या करार दिया गया। किसान अपनी आजीविका को लेकर चिंतित नागरिक नहीं थे। वे चंडीगढ़, जम्मू और कश्मीर जाने वाले राजमार्ग को रोकने वाले लोग थे। बहस नागरिकता, कृषि अनुबंधों या विधिक प्रक्रिया से हटकर यात्रा समय और ट्रैफिक पर आ गई। असुविधा स्वयं एक राजनीतिक दलील और श्रेणी बन गई। ये विरोध प्रदर्शन केवल सरकार द्वारा ही नहीं निपटाए गए। वे इसलिए कमजोर हुए क्योंकि समाज के बड़े हिस्से ने उन्हें लोकतांत्रिक कर्म के बजाय निजी परेशानी के रूप में देखना शुरू कर दिया। यही वर्तमान समय का सबसे बड़ा राजनीतिक कौशल है। किसी विरोध को कुचलना अब आवश्यक नहीं है, यदि उसे अलग-थलग किया जा सके। शहर को बैरिकेड कर दीजिए। आवाजाही सीमित कर दीजिए। असुविधा को बढ़ने दीजिए। नागरिकों को एक-दूसरे के विरुद्ध खड़ा होने दीजिए। फिर राज्य पीछे हट सकता है और समाज स्वयं वह काम करने लगता है जो कभी सत्ता को करना पड़ता था। जनता ही कहने लगेगी—बहुत हुआ। बंद करो यह सब! यहीं सबसे बड़ा परिवर्तन दिखाई देता है। आपातकाल ने विरोध को चुप कराया था। इस दौर ने विरोध का मनोबल तोड़ा है। दोनों में गहरा अंतर है। जो सत्ता विरोध को हिंसक तरीके से दबाती है, वह अनजाने में अगली प्रतिरोध लहर के लिए चित्र भी पैदा करती है। लाठीचार्ज अक्सर भर्ती पोस्टर बन जाता है। लेकिन मनोबलहीन विरोध में ऐसी ऊर्जा नहीं बचती। वह पहले ही आंशिक रूप से स्वयं को दबा चुका होता है। वह अपनी मांग और अपने प्रदर्शन के बीच का अंतर भूलने लगता है। उसे लगता है कि वायरल होना सुने जाने के बराबर है। भारत में गुस्सा मौजूद है। यह मान लेना भूल होगी कि ऐसा नहीं है। पर वह व्हाट्सऐप समूहों में बहता है। टिप्पणी हाशियों, खंडों में दिखाई देती है। असंतोष, गुस्सा घरों के भीतर होने वाली बातचीतों में मौजूद रहता है। लेकिन जो गुस्सा संगठित नहीं हो सकता, जो सड़क पर मार्च नहीं कर सकता, जो मांग नहीं कर सकता, जो व्यवधान पैदा नहीं कर सकता, वह अंततः अपना रूप बदल लेता है। वह दैनिक जीवन की पृष्ठभूमि बन जाता है। मौजूद रहता है, लेकिन तात्कालिक नहीं लगता। पेपर लीक हो गया। महंगाई बढ़ गई। भ्रष्टाचार जारी है। लेकिन फिर एक वाक्य सामने आता है—सब चल तो रहा है न। यह वाक्य जितना साधारण लगता है, उतना है नहीं। इसमें एक पूरा राजनीतिक दर्शन छिपा हुआ है। यह संतोष नहीं है। यह शुद्ध निराशा भी नहीं है। यह अपेक्षाओं का प्रबंधन है। देश चल रहा है। भ्रष्टाचार चल रहा है। मेरी जिंदगी भी चल रही है। और इन तीनों को एक-दूसरे के साथ समायोजित कर लिया जाता है। क्योंकि विकल्प महंगा है। इतना महंगा कि उसकी कीमत पहले से नहीं मापी जा सकती। दिल्ली की सीमा पर तेरह महीने बैठा किसान कम से कम आंशिक रियायत लेकर घर लौटा। लेकिन किसी आंदोलन में शामिल होने वाला छात्र एफआईआर का जोखिम नहीं उठाता। राजनीतिक राय व्यक्त करने वाला मध्यमवर्गीय पेशेवर अपनी नौकरी को लेकर असुरक्षित हो सकता है। और मनुष्य का मन सचमुच कार्रवाई से बचने के कारण खोजने में बहुत कुशल होता है। विरोध लोकतंत्र को जीवित रखते हैं। वे समाजों को बदलने, सुधारने और कभी-कभी स्वयं को पुनर्निर्मित करने की क्षमता देते हैं। लेकिन आज जो दिखाई देता है, वह मनोबलहीन धुएं पर चलती हुई लोकतांत्रिक व्यवस्था है। जब कोई समाज "चल रहा है न" को अपना प्रमुख राजनीतिक भाव बना लेता है, तब वह वास्तविक अर्थों में स्वयं शासन नहीं कर रहा होता। उस पर शासन किया जा रहा होता है। यह अंतर मामूली नहीं है। और एक बार यह दूरी बहुत अधिक बढ़ जाए तो उसे वापस तय करना भी आसान नहीं होता। सोमवार की सुबह कॉकरोच फिर अपने वातानुकूलित कमरों में लौट गए थे। वे अपने ही वीडियो और अपने ही ट्रेंड देख रहे थे। सो मंत्री भी पद पर कायम है। सड़क ने अपनी बात कह दी थी, पर सुनना किसे है!

-श्रुति व्यास

भारतीय जहाजों पर हमले के बीच ट्रंप से आमने सामने बात करेंगे पीएम मोदी की फ्रांस और स्लोवाकिया यात्रा पर दुनियाभर की नजरें

एजेंसी तेहरान

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की फ्रांस और स्लोवाकिया यात्रा ऐसे समय में हो रही है जब पूरी दुनिया पश्चिम एशिया संकट, समुद्री व्यापार मार्गों पर हमलों, ऊर्जा संकट और वैश्विक शक्ति संतुलन के नए दौर से गुजर रही है। साथ ही फ्रांस में जी-7 शिखर सम्मेलन के दौरान मोदी की अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से होने वाली मुलाकात पर पूरी दुनिया की नजरें टिकी हैं। यह मुलाकात केवल दो नेताओं की सामान्य बातचीत नहीं होगी, बल्कि भारत-अमेरिका संबंधों में उभरे नए तनाव, व्यापार समझौते, हिंद महासागर और पश्चिम एशिया की सुरक्षा तथा चीन के बढ़ते प्रभाव जैसे मुद्दों पर निर्णायक विमर्श का मंच बनेगी। खास बात यह है कि ट्रंप से मुलाकात ऐसे समय हो रही है जब ओमान तट के पास भारतीय जहाजों पर हमला हुआ है और कई भारतीय नागरिक समुद्री हमलों का शिकार बने हैं। हम आपको बता दें कि प्रधानमंत्री मोदी की यह यात्रा दो हिस्सों में बंटी हुई है। पहले चरण में वह फ्रांस के नीस शहर में राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों के साथ द्विपक्षीय वार्ता करेंगे। इसके बाद स्लोवाकिया की ऐतिहासिक यात्रा होगी और फिर वह फ्रांस लौटकर एवियन में आयोजित जी-7 सम्मेलन में भाग लेंगे। इस पूरे कार्यक्रम का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है कि भारत को अब पश्चिमी शक्तियां केवल साझेदार नहीं, बल्कि वैश्विक व्यवस्था के अनिवार्य स्तंभ के रूप में देख रही हैं। देखा जाये तो फ्रांस यात्रा का सामरिक महत्व अत्यंत व्यापक है। भारत और फ्रांस के बीच विशेष वैश्विक रणनीतिक साझेदारी लगातार मजबूत हुई है। नीस में मोदी और मैक्रों 'भारत इनोवेट्स' कार्यक्रम का उद्घाटन करेंगे, जिसमें दोनों देशों के नवाचार उद्यम, निवेश कोष और प्रौद्योगिकी क्षेत्र के दिग्गज शामिल होंगे। यह केवल तकनीकी सहयोग नहीं, बल्कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता, अंतरिक्ष, डिजिटल प्रौद्योगिकी और रक्षा निर्माण में दीर्घकालिक रणनीतिक गठबंधन का संकेत है। सबसे अधिक चर्चा रॉफेल लड़ाकू विमान सौदे को लेकर है। फ्रांस के राजदूत थिएरी माथू ने साफ कहा है कि भारत द्वारा

प्रस्तावित 114 रॉफेल विमानों की खरीद पूरी तरह 'मेक इन इंडिया' की भावना के अनुरूप होगी। यह बयान साधारण नहीं है। इसका सीधा अर्थ है कि फ्रांस भारत को केवल हथियार बेचने वाला देश नहीं रहना चाहता, बल्कि वह भारत को रक्षा विनिर्माण केंद्र के रूप में स्थापित करने में भागीदार बनना चाहता है। यदि अधिकांश रॉफेल विमान भारत में बनते हैं तो इससे भारत की वायु शक्ति के साथ-साथ स्वदेशी रक्षा उद्योग को भी अभूतपूर्व मजबूती मिलेगी। यह चीन और पाकिस्तान दोनों के लिए रणनीतिक संदेश होगा कि भारत अब आयातक नहीं, बल्कि रक्षा उत्पादन शक्ति बनने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। फ्रांसीसी राजदूत का एक और बयान बेहद महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि जी-7 में भारत की भागीदारी अब अपरिहार्य बन चुकी है। यह कथन भारत की बढ़ती वैश्विक हैसियत की पुष्टि करता है। फ्रांस खुलकर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता का समर्थन कर रहा है। फ्रांस यह भी चाहता है कि वैश्विक आर्थिक असंतुलन, आपूर्ति श्रृंखला संकट और ऊर्जा सुरक्षा जैसे मुद्दों पर भारत निर्णायक भूमिका निभाए। स्पष्ट है कि यूरोप अब भारत को चीन के विकल्प के रूप में नहीं, बल्कि स्वतंत्र वैश्विक ध्रुव के रूप में स्वीकार कर रहा है। इसके अलावा, पश्चिम एशिया संकट और होर्मुज जलडमरूमध्य की सुरक्षा भी इस यात्रा के केंद्र में है। फ्रांस ने भारत से प्रस्तावित रक्षात्मक समुद्री मिशन में भागीदारी की अपेक्षा जताई है। यह वही समुद्री मार्ग है जहां से दुनिया की बड़ी ऊर्जा आपूर्ति गुजरती है। भारतीय जहाजों पर लगातार हो रहे हमले भारत की चिंता बढ़ा रहे हैं। ऐसे में ट्रंप और मोदी की मुलाकात विशेष महत्व रखती है। दोनों देशों के बीच व्यापार समझौते के साथ समुद्री सुरक्षा और आतंकवाद विरोधी सहयोग पर भी गहन चर्चा होने की संभावना है। हालांकि हाल के घटनाक्रमों ने यह भी संकेत दिया है कि भारत और अमेरिका के रिश्तों में कुछ खिंचाव उभरा है। भारतीय जहाजों की सुरक्षा को लेकर नई दिल्ली की चिंता बढ़ी है और भारत यह संदेश देना चाहता है कि वैश्विक समुद्री मार्गों की सुरक्षा केवल पश्चिमी देशों की जिम्मेदारी नहीं हो सकती। इसके अलावा, मोदी की स्लोवाकिया यात्रा भी रणनीतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। वर्ष 1993 में स्लोवाकिया के गठन के बाद यह किसी भारतीय प्रधानमंत्री की पहली यात्रा होगी। यह मध्य यूरोप में भारत की बढ़ती सक्रियता का संकेत है। हम आपको बता दें कि स्लोवाकिया उन्नत इंजीनियरिंग, लक्जरी वाहन निर्माण और रेलवे प्रौद्योगिकी का बड़ा केंद्र माना जाता है। भारत यहां व्यापार, निवेश, रेलवे निर्माण, हरित प्रौद्योगिकी और रक्षा सहयोग को नई ऊंचाई देने की तैयारी में है। भारत और स्लोवाकिया के बीच व्यापार तेजी से बढ़ा है और भारतीय कंपनियां वहां मजबूत उपस्थिति बना चुकी हैं। टाटा समूह, टीसीएस और कई भारतीय उद्योग समूह वहां सक्रिय हैं। लगभग नौ हजार भारतीय पेशेवर स्लोवाकिया में काम कर रहे हैं। दोनों देशों के बीच रक्षा सहयोग भी तेजी से बढ़ रहा है। कभी स्लोवाकिया भारत को सैन्य उपकरण देता था, लेकिन अब भारत भी उसे रक्षा सामग्री उपलब्ध करा रहा है। यह बदलते सामरिक समीकरणों का स्पष्ट संकेत है।

भारत की बढ़ेगी ताकत, 114 राफेल विमानों के लिए फ्रांस देगा टेक्नोलॉजी और हथियार जोड़ने की गारंटी

एजेंसी पेरिस

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की यात्रा से पहले फ्रांस ने भरोसा दिलाया है कि वह राफेल फाइटर जेट के लिए टेक्नोलॉजी ट्रांसफर करने को तैयार है। वह भारत को राफेल लड़ाकू विमान का सोर्स कोड भी सौंपेगा, ताकि भारतीय हथियारों को इसमें इंटीग्रेट किया जा सके। यह दावा द ट्रिब्यून ने अपनी रिपोर्ट में किया है। रिपोर्ट में फ्रांस के वरिष्ठ राजनयिक सूत्र ने ट्रिब्यून से बात करते हुए कहा है कि "हां, हम टेक्नोलॉजी शेयर करने को तैयार हैं और 'मेक इन इंडिया' इस डील का हिस्सा होगा।" रिपोर्ट के अनुसार, जेट में भारतीय हथियारों को शामिल करने के बारे में पूछे जाने पर सूत्र ने कहा, "स्थानीय हथियारों को शामिल करना भी डील का हिस्सा है।" सूत्र ने आगे कहा कि फ्रांस भारत के साथ अपने सैन्य संबंधों को क्रेता या विक्रेता के रिश्ते के तौर पर नहीं देखता है और "इस समय बहुत अहम बातचीत चल रही है"। भारत ने 114 राफेल लड़ाकू विमानों को खरीदने के लिए फ्रांस को एक औपचारिक 'लेटर ऑफ रिक्वेस्ट' (LoR) भेजा है। LoR एक औपचारिक सरकारी कम्युनिकेशन है जिसका इस्तेमाल इंटर-गवर्नमेंटल एग्रीमेंट (IGA) फ्रेमवर्क के तहत रक्षा खरीद शुरू करने के लिए किया जाता है। ये राफेल लड़ाकू विमान 'मेक इन इंडिया' योजना के तहत खरीदे जाएंगे, जिसमें फ्रांसीसी कंपनी डसॉल्ट एक भारतीय कंपनी के साथ साझेदारी करेगी। इस डील के लिए भारत ने स्वदेशी हथियारों की तैनाती और डेटा लिंक की शर्तें रखी हैं जिन पर कोई समझौता नहीं किया जा सका है। द ट्रिब्यून ने बताया है कि इंजन, एयरफ्रेम और एवियोनिक्स टेक्नोलॉजी ट्रांसफर का हिस्सा हैं। सभी 114 राफेल जेट में भारतीय हथियारों, मिसाइलों और गोला-बारूद को शामिल करना भी डील का हिस्सा है। उम्मीद है कि डसॉल्ट एविएशन भारत को सुरक्षित डेटा लिंक उपलब्ध कराएगी ताकि जेट को भारतीय रडार और सेंसर के साथ डिजिटल रूप से जोड़ा जा सके और जमीन पर मौजूद कंट्रोलर्स को तस्वीरें भेजी जा सकें।

क्या 'लीडर' खामेनेई बदलेंगे मिडिल ईस्ट का गेम? ट्रंप और नेतन्याहू की असली कहानी

एजेंसी नुक

ईरान पर बमबारी कर देते हैं। बनी बनाई बात बिगाड़ देते हैं। तो अमेरिका और इजराइल के बीच चल क्या रहा है? ट्रंप हर मोड़ पर लाचार नजर आ रहे हैं। इजरायल ने सीजफायर का उल्लंघन कर लेबनान पर हमला क्यों किया? और ईरान ने जवाब क्यों दिया? इजराइल क्यों यह सब कर रहा है? इन सवालों के जवाब खोजे जा रहे हैं। इस सवाल का भी कि क्या ईरान पर हमला कर नेतन्याहू ने ट्रंप को चैलेंज कर दिया है या नेतन्याहू को पर्दे के पीछे से ट्रंप ही सपोर्ट कर रहे हैं। तमाम सवालों के जवाब तलाशने के लिए हमने मीडिल ईस्ट मामलों की जानकार डॉ. शुभदा चौधरी जी से खास बातचीत की। जहां हमने पूछा कि क्या ईरान-अमेरिका-इजरायल संघर्ष सिर्फ न्यूक्लियर मुद्दा है, या इसके पीछे क्षेत्रीय नेतृत्व की लड़ाई भी है? ईरान-इजराइल संघर्ष के बीच एक ऐसा नाम है जो कभी कैमरे के सामने नहीं आता, कभी कोई सार्वजनिक भाषण नहीं देता, लेकिन उसे ईरान का सबसे पावरफुल चेहरा माना जा रहा है। वह हैं ईरान के सुप्रीम लीडर अयातुल्ला खामेनेई के बेटे

मोजतबा खामेनेई। डॉक्टर शुभदा चौधरी ने प्रभासाक्षी के खास शो नो फिल्टर के इंटरव्यू में खुलासा किया कि मोजतबा खामेनेई ईरान में एक 'घोस्ट' (परछाई) की तरह काम करते हैं। वे जनता के सामने बिल्कुल नहीं आते, लेकिन पर्दे के पीछे से ईरान की सबसे खतरनाक सेना आईआऱजीसी (इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स) और अपने पिता अयातुल्ला खामेनेई के बीच के सबसे बड़े मध्यस्थ रहे हैं। मुस्तबा खामेनेई साल 1987 से ही आईआऱजीसी से जुड़े हुए हैं, जब ईरान-इराक युद्ध चल रहा था। ईरान में होने वाले इंटरनेट ब्लैकआउट, साइबर सर्विलांस और पूरी सुरक्षा व्यवस्था का कंट्रोल उन्हीं के हाथों में माना जाता है। अक्सर पश्चिमी देश यह दावा करते हैं कि ईरान में वे 'रिजीम चेंज' (सत्ता परिवर्तन) कर देंगे, लेकिन जानकारों का मानना है कि मुस्तबा खामेनेई की वजह से IRGC अब पहले से कहीं ज्यादा कट्टर और मजबूत हो चुकी है। ऐसे में अगर इस जंग के बाद कोई पीस डील होती भी है, तो उसका सबसे बड़ा फायदा ईरान और मुस्तबा खामेनेई को ही मिलेगा, क्योंकि जमीनी स्तर पर उनकी पकड़ को हिला पाना नामुमकिन है।

जी-7 समिट में होगा पश्चिम एशिया संकट पर एक अलग से सेशन, भारत और अमेरिका के नेता भी होंगे शामिल

एजेंसी नई दिल्ली

पश्चिम एशिया में चल रहा युद्ध और उसका दुनिया भर में हो रहे असर को लेकर जी-7 समिट में भी चर्चा होगी। अगले हफ्ते जी-7 शिखर सम्मेलन फ्रांस में होना है, जिसके लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी फ्रांस जा रहे हैं। फ्रांस के डिप्लोमेटिक सूत्रों के मुताबिक अगले हफ्ते होने वाले जी-7 समिट में एक सेशन पश्चिम एशिया संकट पर भी होगा। इसमें सऊदी अरब, कतर, यूएई और इज्पिट को भी इनवाइट किया गया है। इस सेशन में इन देशों के अलावा भारत और अमेरिका के नेता भी शामिल होंगे। सूत्रों के मुताबिक इस बैठक में समुद्री रास्तों में बिना रूकावट और सुरक्षित आवाजाही पर बात होगी। उन्होंने कहा कि हम पश्चिम एशिया में चल रहे युद्ध का हिस्सा नहीं हैं लेकिन होर्मुज स्ट्रेट का असर हम सब पर पड़ रहा है। इसमें ईरान के साथ निगोसिएशन को लेकर भी बात होगी। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने भी कहा कि जी-7 में वैश्विक मुद्दों पर चर्चा होगी और अभी के संदर्भ में पश्चिम एशिया पर भी बात होगी। उन्होंने कहा कि होर्मुज स्ट्रेट को लेकर हमने अपना रुख स्पष्ट कर दिया है। हम चाहते हैं और हमने आग्रह किया है कि अंतरराष्ट्रीय कानून के अनुसार इस जलमार्ग में निर्बाध और सुरक्षित समुद्री आवाजाही सुनिश्चित हो। यही हमारी स्थिति है। यह एक ऐसा मुद्दा है जिस पर जी-7 में चर्चा होगी और हम अपने विचार वहां मजबूती से रखेंगे। जी-7 शिखर सम्मेलन में भारत को आमंत्रित किए जाने पर फ्रांस के डिप्लोमेटिक सूत्रों ने कहा कि भारत हमारे लिए टॉप प्रायोरिटी है और भारत के साथ हमारे विशेष संबंध है। इसलिए भारत जी-7 के सभी ट्रैक्स (कार्यक्षेत्रों) में शामिल हुआ। उन्होंने कहा कि दोनों देशों के बीच भरोसे और विश्वास का स्तर बहुत मजबूत हो चुका है। हम दोनों के लिए किसी भी मुद्दे पर खुलकर बातचीत करना आसान है। भारत जब अपनी किसी समस्या का समाधान खोजता है तो उसका लाभ पूरी दुनिया को मिलता है।" भारत और फ्रांस बीच राफेल फाइटर जेट की डील को लेकर विदेश मंत्रालय के अधिकारी ने कहा कि फ्रांस भारत का एक भरोसेमंद रक्षा साझेदार है। दोनों देश रक्षा क्षेत्र में को-डिवेलपमेंट की दिशा में काम कर रहे हैं। फ्रांस क्या भारत को टेक्नॉलजी ट्रांसफर करने में कंफर्टेबल है, इस सवाल पर फ्रांस के डिप्लोमेटिक सूत्रों ने कहा कि हां, हमने पिछले 10 सालों में ये करके दिखाया है। उन्होंने कहा कि हमारा ग्राहत और विक्रेता वाला रिश्ता नहीं है बल्कि बराबरी का संबंध है। साथ ही कहा कि डिफेंस डील्स में मेक इन इंडिया भी एक अहम हिस्सा होगा। साथ ही कहा कि ये डील पिछली डील से अलग होगी। फांस के डिप्लोमेटिक सूत्रों ने कहा कि जी-7 में इनोवेशन पर बहुत ज्यादा फोकस होगा। विदेश मंत्रालय के सेक्रेटरी (वेस्ट) सिबी जॉर्ज ने कहा कि जी-7 शिखर सम्मेलन के लिए कुछ प्रमुख प्राथमिकताएं तय की गई हैं। व्यापक रूप से इनमें अत्यधिक वैश्विक आर्थिक असंतुलनों को कम करना और साझा आर्थिक विकास को बढ़ावा देना, अंतरराष्ट्रीय साझेदारियों और विकास सहयोग को मजबूत करना, महत्वपूर्ण खनिजों (क्रिटिकल मिनरल्स) की आपूर्ति श्रृंखलाओं को अधिक लचीला बनाना, ऑनलाइन सुरक्षा को बढ़ावा देना, प्रमुख भू-राजनीतिक संकटों के समाधान पर काम करना और संगठित अपराध के खिलाफ लड़ाई को मजबूत करना शामिल है। इस बार G7 शिखर सम्मेलन में भारत की 13वीं भागीदारी होगी जबकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी लगातार सातवीं बार इस सम्मेलन में शामिल होंगे। पीएम मोदी की यह यात्रा 14 से 18 जून तक चलेगी और इसमें फ्रांस के तीन शहरों के साथ स्लोवाकिया भी शामिल है।

पराई जंग में 'कोलैटरल डैमेज' बन रहे भारतीय नाविक! ईरान युद्ध के बीच समंदर में मंडराया बड़ा खतरा

एजेंसी मस्कट

भारत ने आधिकारिक तौर पर पुष्टि की है कि बुधवार को ओमान तट के पास एक टैंकर पर अमेरिकी नौसेना के हमले में तीन भारतीय नाविकों की मौत हो गई। ये नाविक अमेरिकी हमले के बाद से लापता थे। अब शिपिंग मंत्री सर्बानंद सोनोवाल ने पुष्टि की है कि तीनों क्रू मेंबर्स के शव बरामद कर लिए गए है और उनकी पहचान कर ली गई है। भारत ने इस हमले को लेकर अमेरिकी डिप्टी चीफ ऑफ मिशन को तलब कर कड़ा विरोध दर्ज कराया है। इस बीच खबर है कि आज भी एक जहाज पर हमला हुआ है, जिस पर भारतीय क्रू सवार हैं, हालांकि सभी लोगों को सुरक्षित बचा लिया गया है। इस बीच अमेरिका ने मोटर टैंकर सेट्टेबेलो पर बुधवार को हुए हमले की पुष्टि करते हुए दावा किया था कि इस जहाज ने आदेश मानने से इनकार किया और घेराबंदी को तोड़ा। इस कारण प्रिसिजन गाइड म्यूनिशन के जरिए जहाज के इंजन रूम को निशाना बनाया गया। भारतीय विदेश मंत्रालय ने पहले बताया था कि पलाऊ के झंडे वाले कमर्शियल जहाज एमटी सेट्टेबेलो पर सवार 21 भारतीय नाविकों को बचा लिया गया है और तीन

नाविक लापता हैं। मंत्रालय ने अमेरिकी हमले की निंदा भी की और इसे "बेहद चिंताजनक" बताया। उसने तनाव कम करने का आग्रह किया। खाड़ी क्षेत्र में बढ़ते तनाव के बीच ओमान की राजधानी मस्कट स्थित भारतीय दूतावास ने गुरुवार को कहा कि वह ओमान के शिनास बंदरगाह के निकट एक पोत से जुड़ी घटना पर ''करीबी नजर'' रखे हुए है। भारतीय दूतावास ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, ''हमें आज सुबह ओमान के शिनास बंदरगाह के निकट एक पोत से जुड़ी घटना की जानकारी मिली है। हम स्थिति पर लगातार नजर बनाए हुए हैं और अधिक जानकारी के लिए स्थानीय अधिकारियों के साथ समन्वय कर रहे हैं।'' हालांकि, दूतावास ने घटना के बारे में कोई अतिरिक्त विवरण साझा नहीं किया। फॉरवर्ड सीमेन यूनियन ऑफ इंडिया ने X पर बताया कि हालिया घटना में शामिल जहाज MT जलवीर (MT Jalveer) है। भारत नाविकों के सबसे बड़े वैश्विक आपूर्तिकर्ताओं में से एक है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, आज तीन लाख से अधिक भारतीय समुद्री क्षेत्र में काम करते हैं। यह संख्या एक दशक पहले के 1.25 लाख से अधिक है। दुनिया भर में समुद्री जहाजों पर काम करने वाले कर्मचारियों में भारतीयों की हिस्सेदारी लगभग 10-12 प्रतिशत है। ये लोग भारतीय और विदेशी कंपनियों के जहाजों पर काम करते हैं। समुद्री उद्योग के आंकड़ों के अनुसार, भारतीय नाविक कैप्टन, नेविगेशन ऑफिसर, मरीन इंजीनियर और तकनीकी विशेषज्ञ जैसे खास पदों पर काम करते हैं। ये लोग दुनिया भर में कच्चे तेल और लिक्विफाइड नेचुरल गैस से लेकर अनाज और उपभोक्ता सामान तक सब कुछ पहुंचाने में मदद करते हैं और वैश्विक अर्थव्यवस्था के सुचारू रूप से चलने के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं।

अमेरिका ने भारतीयों से भरे तीसरे जहाज पर हमले की बात कबूली

एजेंसी टाम्पा

अमेरिका ने माना है कि उसने गिनी-बिसाऊ के झंडे वाले एमटी जलवीर को निशाना बनाया है। कथित तौर पर उनके निर्देशों का पालन न करने के कारण ओमान की खाड़ी में एक तेल टैंकर को निष्क्रिय किया गया। सेंटकॉम ने इसे लेकर बयान जारी किया है। अमेरिकी अधिकारियों के अनुसार, जहाज ईरानी तेल के परिवहन की कोशिश कर रहा था और ईरान के खिलाफ लागू नाकाबंदी का उल्लंघन कर रहा था। इस सप्ताह अमेरिकी कार्रवाई का शिकार बनने वाला यह तीसरा वाणिज्यिक जहाज है। यूनाइटेड नेशन्स सेंट्रल कमांड (सेंटकॉम) ने बताया कि उसने गिनी-बिसाऊ के झंडे वाले एमटी जलवीर के खिलाफ कार्रवाई की। अमेरिकी दावे के अनुसार, जहाज ईरान से तेल लेकर ओमान की खाड़ी के रास्ते आगे बढ़ने का प्रयास कर रहा था। जब चालक दल ने अमेरिकी बलों के निर्देशों का बार-बार पालन नहीं किया, तो एक अमेरिकी विमान ने जहाज के इंजन रूम को निशाना बनाते हुए दो हेलफायर मिसाइलें दागीं। सेंटकॉम के अनुसार, इससे पहले सोमवार और मंगलवार को क्रमशः पालाउ-ध्वज वाले एमटी मैरीवेक्स और एमटी सेट्टेबेलो को भी निशाना बनाया गया था। अमेरिकी पक्ष का दावा है कि मैरीवैक्स ईरानी बंदरगाह की ओर जा रहा था, जबकि सेट्टेबेलो ईरानी तेल ले जा रहा था। ओमान की खाड़ी में भारतीय नाविकों वाले जहाजों एमटी सेट्टेबेलो और एमटी जलवीर पर हुए हमलों को लेकर भारत ने अमेरिका के सामने कड़ा विरोध दर्ज कराया है। भारतीय जहाजों पर अमेरिकी सैन्य कार्रवाई में 3 भारतीय नाविकों की मौत के बाद, भारत ने नई दिल्ली स्थित अमेरिकी दूतावास के उप-प्रमुख को तलब कर गहरी आपत्ति जताई है। 10 जून को एमटी सेट्टेबेलो पर किए गए हमले में भारत के तीन नाविकों की मौत हो गई। इससे पहले मंगलवार को एमटी मैरीवेक्स पर हमला हुआ था जिसके बाद 24 नाविकों को रेसेक्यू किया गया था।

अमेरिकी नौसेना ने लगातार तीसरे दिन भारतीय क्रू वाले जहाज पर किया हमला।

अमेरिका ने मंगलवार को M/T मैरिवेक्स और बुधवार को M/T सेटेबेलो पर किया था हमला।

बुधवार को M/T सेटेबेलो पर किए अमेरिकी हमले में तीन भारतीय क्रू की मौत की पुष्टि।

भारत ने अमेरिकी दूतावास के वरिष्ठ अधिकारी को तलब कर जताया विरोध।

अमेरिकी सेना ने कहा कि 13 अप्रैल को नाकाबंदी शुरू होने के बाद से उसके बलों ने निर्देशों का पालन न करने वाले कुल नौ जहाजों को निष्क्रिय किया है। वहीं, 135 जहाजों को दिशा बदलने के लिए मजबूर किया गया, जबकि मानवीय सहायता से जुड़े 42 जहाजों को गुजरने की अनुमति दी गई।

5 दिग्गज खिलाड़ी जो आखिरी बार फीफा विश्व कप में दिखेंगे, दो गोल्डन बूट भी जीत चुके

एजेंसी नई दिल्ली

फीफा विश्व कप 2026 की शुरुआत में कुछ ही घंटों का समय बचा हुआ है। अमेरिका, कनाडा, और मेक्सिको की मेजबानी में टूर्नामेंट का आयोजन किया जा रहा है। फीफा विश्व कप में पहली बार 48 टीमें हिस्सा ले रही हैं और पहली ही बार 100 से ज्यादा मुकाबला होंगे। यह फीफा विश्व कप कई स्टार खिलाड़ियों का आखिरी टूर्नामेंट भी हो सकता है। हम आपको ऐसे ही 5 नाम बताते हैं।

लुका मोड्रिक क्रोएशिया को विश्व कप 2018 के फाइनल में पहुंचाना चुके हैं। उस टूर्नामेंट में उन्होंने गोल्डन बूट भी जीता था उनकी उम्र 40 साल की हो चुकी है। मिडफील्ड के जादूगर माने जाने वाले मोड्रिक अपने आखिरी विश्व कप को यादगार बनाने की पूरी कोशिश करेंगे।

नेमार जूनियर काफी समय से चोट से जूझ रहे हैं। किसी को उम्मीद नहीं थी लेकिन उन्हें फीफा विश्व कप टीम में जगह मिल गई। इंजरी की वजह से टूर्नामेंट के पहले मैच में उनके खेलने पर संशय है। वह 34 साल के ही हैं लेकिन इंजरी की वजह से उनका आखिरी टूर्नामेंट माना जा रहा है। नेमार 2002 के बाद से विश्व कप नहीं जीत सकी ब्राजील को चैंपियन बनाना चाहेंगे।

थॉमस मुलर- जर्मनी को 2014 में विश्व चैंपियन बनाने में अहम भूमिका निभाने वाले थॉमस मुलर 36 साल के हो चुके हैं। दबाव में भी बेहतरीन प्रदर्शन करने के लिए अपनी पहचान बनाने वाले मुलर का भी यह आखिरी विश्व कप हो सकता है। 131 मैचों में अटैकिंग मिडफील्डर मुलर के नाम 45 गोल हैं।

लियोनेल मेसी- अर्जेंटीना को अपनी कप्तानी में विश्व कप 2022 में चैंपियन बनाने वाले मेसी 24 जून को 39 साल के हो जाएंगे। फीफा विश्व कप 2030 तक वह 43 साल के हो जाएंगे। ऐसे में फीफा विश्व कप 2026 उनके करियर का आखिरी विश्व कप हो सकता है। मेसी को सर्वकालिक महान फुटबॉलर माना जाता है। वह दो बार गोल्डन बॉल का अवॉर्ड जीत चुके हैं।

क्रिस्टियानो रोनाल्डो- पुर्तगाल 41 साल के हो चुके पुर्तगाल के स्टार फॉरवर्ड क्रिस्टियानो रोनाल्डो अपना छठा विश्व कप खेलने के लिए तैयार हैं। उनकी उम्र को देखते हुए यह उनका आखिरी विश्व कप माना जा रहा है। पिछले दो दशक में अपने करिश्माई खेल से खुद को महानतम फुटबॉलर के रूप में स्थापित करने वाले रोनाल्डो का आखिरी सपना पुर्तगाल को विश्व चैंपियन बनाना है। रोनाल्डो पुर्तगाल के लिए 228 मैचों में 143 गोल कर चुके हैं।

दिल्ली में जन्मे निखिल चौधरी ऑस्ट्रेलियाई टी20 टीम में शामिल

एजेंसी नई दिल्ली

ऑस्ट्रेलिया ने बांग्लादेश के खिलाफ आगामी टी20 सीरीज के लिए दिल्ली में जन्मे अनकैप्ड स्पिनर निखिल चौधरी को अपनी टीम में शामिल किया है। 30 साल के निखिल को ट्रेविस हेड के निजी कारणों से छुट्टियों पर जाने के बाद टीम में जगह दी गई है। होबार्ट हरिकेंस के इस ऑलराउंडर को बांग्लादेश के खिलाफ टी20 सीरीज के लिए टीम में शामिल किए जाने के बाद, चौधरी 60 से ज्यादा वर्षों में ऑस्ट्रेलिया के लिए खेलने वाले इकलौते भारतीय मूल के खिलाड़ी बन सकते हैं। इस दशक की शुरुआत में ऑस्ट्रेलिया जाने से पहले दिल्ली में जन्मे इस लेग-स्पिन ऑलराउंडर को मिडिल ऑर्डर में जगह बनाने के लिए जोएल डेविस और एरॉन हार्डी जैसे खिलाड़ियों से प्रतिस्पर्धा करनी होगी। ये दोनों खिलाड़ी फिलहाल सिर्फ टी20 टीम का हिस्सा हैं। आईपीएल में दिल्ली कैपिटल्स टीम का हिस्सा निखिल इन दिनों बेल्जियम में ईयूटी20 प्रतियोगिता में जेबी ब्रुग्स के लिए खेल रहे हैं। ऑस्ट्रेलिया के सिलेक्टर टोनी डोडेमेड को भरोसा है कि अगर यह गेंदबाजी ऑलराउंडर प्लेइंग इलेवन में सिलेक्शन की रेस जीतने में सफल रहता है, तो वह अच्छा प्रदर्शन कर सकते हैं। डोडेमेड ने कहा, "निखिल कुछ समय से राष्ट्रीय हित के खिलाड़ी रहे हैं। वह इस टूर के लिए स्टैंडबाय खिलाड़ी थे। वह ब्रिस्बेन में प्री-सीजन कैंप में स्क्वाड में शामिल हुए और ट्रेविस हेड की जगह आए हैं। पैनल उनके बिग बैश लीग की फॉर्म से बहुत प्रभावित हुआ है, खासकर पिछले सीजन में दमदार प्रदर्शन के बूते ही वह टीम में जगह बनाने में सफल रहे हैं। वह इस साल के आईपीएल में दिल्ली कैपिटल्स सेटअप का भी हिस्सा रहे हैं। उन्होंने आगे कहा निखिल को बांग्लादेश में बहुत कीमती अनुभव मिलेगा और जब हम अगले हफ्ते यहां शुरुआती टी20 मैच के लिए टीम चुनेंगे, तो वह ऑस्ट्रेलिया के लिए अपना पहला मैच खेलने की रेस में होंगे।" दिल्ली में जन्मे निखिल चौधरी ने हरभजन सिंह, शुभमन गिल और अभिषेक शर्मा जैसे खिलाड़ियों के साथ पंजाब की राज्य टीम के लिए 14 लिमिटेड ओवर के मैच खेले हैं, और आईपीएल में मुंबई इंडियंस की तरफ से बहुत पहले ट्रायल भी दे चुके हैं। जब महामारी की वजह से इंटरनेशनल बॉर्डर बंद हो गए, तो वह क्वींसलैंड में अपने अंकल से मिलने गए थे, जिससे उन्हें ऑस्ट्रेलिया में अपने क्रिकेट के सपनों को आगे बढ़ाने का मौका मिला। तीन मुकाबलों की टी20 इंटरनेशनल सीरीज चटगांव में खेली जाएगी, जिसका पहला मैच 17 जून को होगा। दूसरा टी20 मुकाबला 19 जून को होगा, जबकि सीरीज का तीसरा और आखिरी मैच 21 जून को खेला जाना है। ऑस्ट्रेलिया टी20 टीमः मिचेल मार्श (कप्तान), जेवियर बार्टलेट, निखिल चौधरी, कूपर कोनोली, टिम डेविड, जोएल डेविस, नाथन एलिस, कैमरून ग्रीन, एरॉन हार्डी, निखिल चौधरी, जोश इंग्लिस, स्पेंसर जॉनसन, मैथ्यू कुहनेमैन, रिले मेरेडिथ, जोश फिलिप, मैथ्यू रेनशॉ, एडम जम्पा।

रिकॉर्ड छठे विश्व कप खेलेंगे मेसी -रोनाल्डो बाइचुंग भूटिया बोले- इनका दबदबा अब भी कायम

एजेंसी नई दिल्ली

भारतीय फुटबॉल टीम के पूर्व कप्तान बाइचुंग भूटिया ने फुटबॉल के दिग्गज खिलाड़ियों लियोनेल मेसी और क्रिस्टियानो रोनाल्डो की विरासत और उनके असर पर बात करते हुए कहा है कि अपने शानदार करियर के आखिरी दौर में होने के बावजूद, वे 2026 फीफा वर्ल्ड कप के मुख्य आकर्षण बने हुए हैं। 2026 के इस टूर्नामेंट में रिकॉर्ड संख्या में खिलाड़ी हिस्सा लेंगे। फाइनल स्क्वाड लिस्ट के मुताबिक, 48 देशों के 1,248 खिलाड़ी इस बड़े ग्लोबल टूर्नामेंट में मुकाबला करेंगे, जिसकी शुरुआत 12 जून (इंडियन स्टैंडर्ड टाइम) को होगी। आज के दौर के दो महान खिलाड़ी, रोनाल्डो और मेसी, जिन्होंने लगभग दो दशकों तक ग्लोबल फ़ुटबॉल पर अपना दबदबा बनाए रखा है, अपने छठे वर्ल्ड कप में हिस्सा ले रहे हैं, जो एक ऐतिहासिक और रिकॉर्ड बनाने वाला कारनामा है। अर्जेंटीना के इस सुपरस्टार ने 41 साल के रोनाल्डो से ज़्यादा 'यूरोपियन गोल्डन बूट' जीते हैं; वे छह अवॉर्ड्स के साथ इस लिस्ट में सबसे ऊपर हैं, जबकि रोनाल्डो ने चार अवॉर्ड जीते हैं। मेसी ने रिकॉर्ड आठ बार 'बैलोन डी'ओर' भी जीता है, जबकि रोनाल्डो ने यह प्रतिष्ठित अवॉर्ड पांच बार अपने नाम किया है। इन दोनों खिलाड़ियों ने एक दशक से भी ज़्यादा समय तक इस अवॉर्ड पर अपना दबदबा बनाए रखा और 2008 से 2023 के बीच कुल मिलाकर 13 बार इसे जीता। इस ऐतिहासिक प्रतिद्वंद्विता और टूर्नामेंट पर उनके असर के बारे में बात करते हुए, भूटिया ने इस ग्लोबल इवेंट के नॉकआउट स्टेज में रोनाल्डो और मेसी के आमने-सामने होने की संभावना पर उत्साह ज़ाहिर किया। भूटिया ने कहा कि हो सकता है कि हम मेसी और रोनाल्डो को क्वार्टर-फ़ाइनल या सेमी-फ़ाइनल या उसके आस-पास खेलते हुए देखें। और यह एक शानदार मैच हो सकता है। लेकिन फिर भी, मुझे लगता है कि चार साल या शायद आठ साल पहले, इसे लेकर बहुत ज़्यादा उत्साह होता। पूरा वर्ल्ड कप रोनाल्डो और मेसी के बारे में बात कर रहा होता, हालाँकि इस वर्ल्ड कप में भी हम मेसी और रोनाल्डो के बारे में ही बात कर रहे हैं। अर्जेंटीना के साथ इंटर मियामी के कप्तान मेसी के शानदार सफ़र पर बात करते हुए, भूटिया ने बताया कि कैसे कतर में 2022 वर्ल्ड कप की जीत ने 'छोटे जादूगर' (मेसी) को आज़ाद किया और 'ला एल्बिसेलेस्टे' (अर्जेंटीना टीम) के दबदबे का एक अभूतपूर्व दौर शुरू किया, जिसने अपनी ट्रॉफ़ी कैबिनेट में दो कोपा अमेरिका खिताब भी जोड़े। भारतीय फ़ुटबॉल के दिग्गज ने कहा कि मुझे लगता है कि अर्जेंटीना के साथ मेसी का प्रदर्शन शानदार रहा है, क्योंकि उन्हें उस जीत की ज़रूरत थी। कोपा अमेरिका जीतने के बाद, उन्होंने पिछला वर्ल्ड कप (2022) और फिर एक और कोपा अमेरिका जीता। तो अब उनके लिए यह एक ऐसा दौर है जिसमें उन्होंने सब कुछ जीत लिया है।

वर्ल्ड कप 2027 के शेड्यूल को लेकर आया बड़ा अपडेट, इस तारीख से शुरू हो सकता है टूर्नामेंट

एजेंसी नई दिल्ली

वर्ल्ड कप 2027 का आयोजन दक्षिण अफ्रीका, जिम्बाब्वे और नामीबिया की संयुक्त मेजबानी में होने वाला है। 31 मई को अहमदाबाद में हुई आईसीसी की बैठक में टूर्नामेंट के शेड्यूल को लेकर चर्चा की गई थी। ईएसपीएन क्रिकइंफो से मिली जानकारी के अनुसार वर्ल्ड कप 2027 की शुरुआत 4 अक्टूबर से हो जाएगी, जबकि फाइनल मुकाबला 21 नवंबर को होना तय है। इस साल के जुलाई में आईसीसी की वार्षिक आम बैठक होगी जिसमें शेड्यूल के अंतिम ढांचे पर मुहर लग जाएगी। वर्ल्ड कप 2027 में कुल 54 मैच खेले जाने वाले हैं। जिसमें से दक्षिण अफ्रीका को 41 की मेजबानी मिलने वाली है। जिम्बाब्वे के हिस्से में 8 से 10 मैच आने वाले हैं, जबकि नामीबिया में 3 मुकाबले हो सकते हैं। हरारे और बुलावायो के साथ ही मोसी-ओआ-तुन्या इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में भी मैच होने वाले हैं। यहां निर्माण कार्य इस साल के आखिर तक पूरा हो जाएगा और अगले साल मई में इसके आधिकारिक उद्घाटन से पहले घरेलू क्रिकेट मैच खेले जाएंगे।

दक्षिण अफ्रीका साल 2003 के बाद पहली बार वनडे विश्व कप की मेजबानी करने वाला है। हालांकि इस दौरान यहां पर टी20 वर्ल्ड कप 2007, 2009 चैंपियंस ट्रोफी और महिला टी20 विश्व कप 2023 की मेजबानी की है। जिम्बाब्वे और नामीबिया ने संयुक्त रूप से अंडर-19 वर्ल्ड कप 2026 की मेजबानी की थी। पिछले 2 संस्करणों में 10 टीमों ने वनडे विश्व कप में भाग लिया था, लेकिन अबकी बार 14 टीमें शामिल होने वाली हैं। 7-7 टीमों के 2 ग्रुप बनाए जाएंगे और हर ग्रुप से शीर्ष 3 टीमें सुपर सिक्स के लिए क्वालीफाई करेंगी।

इसके साथ ही आपको बता दें कि वर्ल्ड कप 2023 की रनर अप भारतीय क्रिकेट टीम 13 जून से अफगानिस्तान के खिलाफ 3 वनडे मैचों की सीरीज खेलने वाली है। इस श्रृंखला को वर्ल्ड कप 2027 की तैयारियों के लिहाज से अहम माना जा सकता है। शुभमन गिल भारत की कप्तानी करते हुए नजर आने वाले हैं। हार्दिक पांड्या और विराट कोहली इस सीरीज में चोटिल होने की वजह से नहीं खेल पाएंगे।

व्यापार

बालेन शाह और मोदी सरकार का बड़ा फैसला, भारत-नेपाल के बीच शुरू हुई डिजिटल पेमेंट सर्विस, नोट बदलने का झंझट खत्म

एजेंसी नई दिल्ली

नेपाल की बालेन शाह और भारत की मोदी सरकार के बीच दोनों करेंसी एक्सचेंज को लेकर बड़ा फैसला हुआ है। दोनों देश के नागरिक अब एक-दूसरे देश में बिना किसी रुकावट के डिजिटल ट्रांजेक्शन कर सकेंगे। दोनों देशों ने UPI-NPI क्रॉस-बॉर्डर रेमिटेंस मैकेनिज्म को आधिकारिक तौर पर शुरू कर दिया गया है। भारत के यूपीआई (UPI) और नेपाल के एनपीआई (NPI) के सीधे जुड़ने से अब दोनों देशों के आम नागरिकों, प्रवासियों और व्यापारियों के लिए पैसे का लेन-देन बेहद आसान हो गया है। यह सिस्टम 6 जून 2026 को आधिकारिक तौर पर चालू किया गया है। अब दोनों देशों के नागरिक मोबाइल बैंकिंग ऐप और डिजिटल वॉलेट के जरिए रियल-टाइम, सुरक्षित और तत्काल पैसों का ट्रांजेक्शन कर सकेंगे। घर पैसे भेजना हुआ आसान भारत में काम करने वाले नेपाली नागरिक और नेपाल में काम करने वाले भारतीय नागरिक अब बिना किसी झंझट के सीधे अपने मोबाइल बैंकिंग ऐप या डिजिटल वॉलेट से अपने घर पैसे ट्रांसफर कर सकते हैं। इसके लिए अब किसी मनी ट्रांसफर एजेंसी के चक्कर काटने की जरूरत नहीं होगी। अकाउंट डिटेल शेयर करने की जरूरत नहीं पैसे भेजने के लिए अब बैंक खाता संख्या या आईएफएससी (IFSC) कोड जैसी संवेदनशील जानकारियां साझा करने की जरूरत नहीं है। सिर्फ मोबाइल नंबर, UPI ID या वर्चुअल पेमेंट एड्रेस (VPA) के जरिए पलक झपकते ही सुरक्षित तरीके से पैसा ट्रांसफर हो जाएगा।

कैश ले जाने की जरूरत नहीं भारत और नेपाल की सीमा खुली होने के कारण लोग अक्सर बड़ी मात्रा में नकद लेकर यात्रा करते थे, जिससे चोरी या गुम होने का डर रहता था।

अब डिजिटल ट्रांसफर से यह जोखिम पूरी तरह खत्म हो जाएगा। कम लागत और पारदर्शी व्यवस्था पारंपरिक तरीकों से पैसे भेजने पर ज्यादा सर्विस चार्ज लगता था। यूपीआई के जरिए पैसे भेजना बहुत सस्ता और पूरी तरह से पारदर्शी होगा, जिससे मेहनत की कमाई का एक-एक पैसा सुरक्षित घर पहुंचेगा। पर्यटकों और स्थानीय दुकानदारों को भी फायदा अगर आप आप नेपाल घूमने जा रहे हैं या वहां के स्थानीय व्यापारी हैं, तो यह सिस्टम आपके लिए बहुत फायदेमंद है। अब भारत और नेपाल के बीच यात्रा करने वाले लोगों को बड़ी मात्रा में नकदी रखने या करेंसी एक्सचेंज की जटिल प्रक्रिया से नहीं गुजरना पड़ेगा। नेपाल के व्यापारियों को अब भारतीय पर्यटकों से कैश लेने की जरूरत नहीं। सीधे डिजिटल पेमेंट मिलने से कैश संभालना आसान होगा और व्यापार बढ़ेगा। दोनों देशों के नागरिक सीधे अपने बैंक खातों या डिजिटल वॉलेट के माध्यम से तत्काल पैसा भेज और प्राप्त कर सकेंगे। इस सेवा की शुरुआत के साथ ही नेपाल उन देशों की सूची में शामिल हो गया है जहां भारत का UPI काम करता है।

अब दुनिया के 9 देशों (सिंगापुर, यूएई, फ्रांस, मॉरीशस, भूटान, कतर, श्रीलंका, कंबोडिया और नेपाल) में भारतीय यात्री बिना किसी परेशानी के यूपीआई ऐप्स से पेमेंट कर सकते हैं।

दुनिया में ईंधन संकट, लेकिन चीन बेफिक्र...तेल की मांग में भारी गिरावट, EV और रेल क्रांति के दम पर कैसे कर दिखाया

एजेंसी नई दिल्ली

ईरान-अमेरिका तनाव के कारण दुनिया के कई देशों में ईंधन संकट पैदा हो गया है। ऐसे में चीन ने दुनिया के लिए एक उदाहरण पेश किया है। इस संकट के कारण चीन के लोगों ने अपनी लाइफस्टाइल में बदलाव किया है। नतीजा यह है कि दुनिया के सबसे बड़े तेल आयातक देश चीन को अब पहले की तुलना में बहुत कम ईंधन की आवश्यकता है। इस बदलाव ने वैश्विक स्तर पर कच्चे तेल की आसमान छूती कीमतों पर लगाम लगाने में बड़ी भूमिका निभाई है। चीन की सबसे बड़ी पेट्रोकेमिकल कंपनी और दुनिया की सबसे बड़ी रिफाइनर सिनोपेक के डेटा के अनुसार अप्रैल में पेट्रोल की बिक्री में सालाना आधार पर 8% और डीजल की बिक्री में 6% की गिरावट आई है। वहीं, गोल्डमैन सैक्स का अनुमान है कि अप्रैल में पेट्रोल से जुड़े उत्पादों की खपत में करीब 20% की बड़ी कमी देखी गई है। चीन में तेल की मांग में गिरावट किसी लॉकडाउन या महामारी के कारण नहीं है। चीनी नागरिक अभी भी यात्राएं कर रहे हैं, लेकिन उन्होंने परिवहन के माध्यम से ईंधन बचाने का एक 'आर्थिक विकल्प' चुन लिया है चीन के परिवहन मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार मार्च और अप्रैल में रेल यात्राओं में सालाना आधार पर 10% की वृद्धि हुई है। वहीं पिछले साल रेल यात्राओं में यह वृद्धि केवल 5% थी। चीन में कई शहरों की सबवे (मेट्रो) और टैक्सियां पूरी तरह से इलेक्ट्रिक हो चुकी हैं। चीन चार्जिंग एलायंस के मुताबिक अप्रैल में ईवी चार्जिंग पिछले साल के मुकाबले 69% बढ़कर अपने ऑल टाइम हाई पर पहुंच गई। परिवहन मंत्रालय ने बताया कि मई दिवस की छुट्टियों के दौरान हाइवे पर चलने वाले कुल वाहनों में से लगभग एक-चौथाई वाहन इलेक्ट्रिक या हाइब्रिड थे। स्ट्रेट ऑफ होर्मुज (Strait of Hormuz) के लगभग बंद होने के कारण तेल की वैश्विक आपूर्ति पर भारी दबाव है। ऐसे में चीन ने अपने कच्चे तेल के आयात में भारी कटौती की है। चीन ने महंगे दामों पर तेल खरीदने के बजाय अपने उस पुराने स्टॉक का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया है, जिसे उसने तेल सस्ता होने के दौरान जमा किया था। चीन का मई महीने का तेल आयात 29% गिरकर 7.8 मिलियन बैरल प्रति दिन (bpd) रह गया, जो पिछले आठ वर्षों में सबसे निचला स्तर है। अप्रैल में भी इसमें 20% की गिरावट देखी गई थी। पेट्रोल के साथ-साथ डीजल की खपत घटने के पीछे चीन का पिछले 5 साल से चल रहा रियल एस्टेट संकट भी एक बड़ी वजह है। गुआंगडोंग प्रांत के एक स्वतंत्र ईंधन व्यापारी ने बताया कि स्थानीय सरकारी निर्माण परियोजनाएं बजट की कमी और बढ़ती कीमतों के कारण डीजल खरीदने के लिए संघर्ष कर रही हैं। वहीं, लॉजिस्टिक्स और माइनिंग से जुड़े कई ग्राहकों ने अपने डीजल ट्रकों को पूरी तरह से इलेक्ट्रिक ट्रकों से बदल दिया है।

संकट के दिनों में की थी एलन मस्क की मदद, खुद फैक्ट्री के फर्श पर सोए, अब होने जा रही है अरबों की कमाई

एजेंसी नई दिल्ली

दुनिया के सबसे अमीर इंसान एलन मस्क (Elon Musk) की सफलता के पीछे कई लोगों का हाथ रहा है, लेकिन एक ऐसा शख्स है जो सालों तक पर्दे के पीछे रहकर मस्क की कंपनियों के लिए संकटमोचक बना रहा। इस शख्स का नाम एंटोनियो ग्रेसियास (Antonio Gracias) है। ग्रेसियास शिकागो की ग्रोथ इक्विटी फर्म वैलर इक्विटी पार्टनर्स (Valor Equity Partners) के फाउंडर और सीईओ हैं। अब उनकी किस्मत बदलने जा रही है दरअसल, ग्रेसियास अब दुनिया के सबसे बड़े निजी निवेश फायदों में से एक हासिल करने जा रहे हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि उनकी शुरुआती मदद अब अरबों डॉलर के मुनाफे में बदलने वाली है। दिग्गज स्पेस कंपनी स्पेसएक्स (SpaceX) के आगामी आईपीओ के बाजार में आने के बाद एंटोनियो ग्रेसियास पर पैसों की बारिश होने वाली है। द न्यू यॉर्क टाइम्स के अनुसार स्पेसएक्स के 1.77 ट्रिलियन डॉलर (लगभग 170 लाख करोड़ रुपये) के संभावित आईपीओ मूल्यांकन के आधार पर, ग्रेसियास और उनकी फर्म वैलर की हिस्सेदारी की कीमत करीब 65 अरब डॉलर होने वाली है। इस लिस्टिंग के बाद मस्क के बाद ग्रेसियास स्पेसएक्स के दूसरे सबसे बड़े घोषित शेयरधारक बन जाएंगे। ग्रेसियास ने स्पेसएक्स में पहली बार साल साल 2008 में निवेश किया था, जब कंपनी यह साबित करने के लिए संघर्ष कर रही थी कि क्या कोई निजी रॉकेट बिजनेस सफल हो सकता है। ग्रेसियास सिर्फ चेक काटने वाले निवेशक नहीं थे। टेस्ला के सबसे कठिन दिनों में वे मैन्युफैक्चरिंग और सप्लाई-चेन की समस्याओं को ठीक करने के लिए खुद फैक्ट्री के फर्श पर सोते थे। साल 2008 के वैश्विक वित्तीय संकट के दौरान जब टेस्ला और स्पेसएक्स दोनों डूबने की कगार पर थीं, तब मस्क के मुताबिक ग्रेसियास ने उन्हें 10 लाख डॉलर का शॉर्ट-टर्म लोन दिया था। ग्रेसियास ने साल 2022 में ट्विटर (अब एक्स) को खरीदने में भी मस्क की वित्तीय मदद की थी। बाद में इसके रीस्ट्रक्चरिंग में हाथ बंटाकर अपनी दोस्ती का सबूत दिया था।

शव को श्मशान ले जाते वक्त राम नाम सत्य क्यों बोला जा जाता है, शिव का नाम क्यों नहीं

शवयात्रा में बोला जाने वाला यह मंत्र, राम नाम सत्य है, सत्य बोलो मुक्ति है, मृतक की सद्गति के साथ जीवित लोगों के लिए एक संदेश होता है। जब कोई व्यक्ति संसार छोड़ जाता है, तो उसके पीछे चलने वाले सगे-संबंधी और समाज के लोग मोह-माया में डूबे होते हैं। 'राम नाम सत्य है' कहकर उन्हें याद दिलाया जाता है कि यह भौतिक शरीर, धन-दौलत और रिश्ते-नाते सब नश्वर यानि अस्थायी हैं, केवल राम का नाम ही एकमात्र शाश्वत और परम सत्य हैं। संस्कृत, व्याकरण और अध्यात्म के दृष्टिकोण से राम शब्द का अर्थ केवल दशरथ पुत्र तक सीमित नहीं है। 'र' का अर्थ है प्रकाश और 'म' का अर्थ है भीतर। जो सृष्टि के कण-कण में रमता है यानि विद्यमान है और जिसके होने से चेतना है, वही राम है। इस प्रकार, राम नाम का अर्थ उस निराकार, सर्वव्यापी ब्रह्म से है जो जन्म और मृत्यु से परे है। भले ही यात्रा के दौरान मुख से राम नाम निकलता है, लेकिन शवयात्रा की अंतिम परिणति भगवान शिव के ही सानिध्य में होती है। श्मशान को महादेव का निवास स्थान माना जाता है। जब पंचतत्वों से बना शरीर अग्नि को समर्पित होता है, तो वह भस्म का रूप लेता है, जिसे भगवान शिव अपने पूरे शरीर पर धारण करते हैं। पूरी प्रक्रिया में हरि और हर यानि राम और शिव दोनों समाहित हैं। अंतिम यात्रा पर चलते समय हरि यानि राम का नाम लिया जाता है और अंत में जीवात्मा को हर यानि शिव तत्व से कल्याण और मोक्ष की प्राप्ति होती है। दोनों में कोई भेद नहीं है, शिव ही राम हैं, और राम ही शिव हैं। भगवान शिव स्वयं राम नाम का जप कर पार्वती जी को इसका महत्व बताते हुए कहते हैं कि, राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे, सहस्त्र नाम तत्तुल्यं राम नाम वरानने। शवयात्रा के दौरान लगातार 'राम नाम' का जप श्मशान के मार्ग में एक ऐसा सुरक्षा कवच बना देता है जिससे कोई भी नकारात्मक शक्ति या प्रेत उस शव को छू नहीं पाती। शवयात्रा में 'राम नाम सत्य है' कहना मृतक की सद्गति के साथ अर्थी को कांधा देने वाले उन चार लोगों तथा पीछे चल रहे प्रियजनों की जागृति के लिए रहता है, इसलिए 'राम नाम सत्य है, सत्य बोलो मुक्ति है' बार-बार दोहराया जाता है, जो यह बताता है कि माया को छोड़कर प्रभु के नाम को ही सत्य मानने पर कल्याण, मोक्ष और मुक्ति का मार्ग निहित है।

जब आपके घर पर हो अंजान साया, तो समझ लें छाया ग्रह राहु-केतु का है प्रभाव

प्राचीन लाल किताब के अनुसार व्यक्ति में सोच-विचार की शक्ति तथा जागते हुए व्यक्ति को सपने दिखाना, नकारात्मक विचार देने का काम राहु का है। व्यक्ति के जीवन का 42 वां वर्ष राहु को दिया गया है। सब कुछ होते हुए भी कुछ ना होना या ना रहने देना छाया ग्रह राहु का कार्य है।

जन्मपत्री में राहु का शुभ प्रभाव होने पर लाल किताब कहती है कि राहु की उपज के कारण शुभ समय में दिमागी लहर सर्व शत्रुओं से बचाव करा देती है तथा उनका नाश करवा देती है, यानि राहु शुभ होने पर अथवा छठे भाव से संबंध रखने पर शत्रुनाशक बन जाता है।

दूसरी ओर राहु अशुभ होने पर निर्णय गलत करा देता है, जिसके कारण व्यक्ति घर के वास्तु में फेरबदल करता है। लाल किताब कहती है कि अशुभ समय में राहु गलत सोच के कारण भवन की सीढ़ियां गलत दिशा में बनवा देता है या फिर छत आदि तुड़वाकर दुबारा बनवाता है, रसोई का स्थान या दिशा बदलवा देता है, शौचालय गलत स्थान पर बनवा देता है, ईशान कोण जहां पर शौचालय नहीं होना चाहिए, वहां पर राहु के प्रभाव से शौचालय बन जाता है। इस प्रकार भ्रमित करने वाली क्रियाओं द्वारा घर में छाया ग्रह के प्रभाव के कारण निर्णय गलत होने लगते हैं, इसे ही अशुभ राहु का प्रभाव समझना चाहिए। छाया ग्रह राहु की दिशा दक्षिण-पश्चिम यानि नैर्ऋत्य कोण मानी गई है। दक्षिण-पश्चिम दिशा में वास्तुदोष वाले मकान में रहने वाला बलवान से भी बलवान व्यक्ति भी अशुभ राहु की महादशा अथवा अन्तर्दशा में चोट-चपेट, आकस्मिक दुर्घटना को प्राप्त होता है, छाया ग्रह के दुष्प्रभाव से छोटे-से-छोटे व्यक्ति भी बड़े-से बड़े व्यक्ति को परेशान कर देता है, ईशान कोण का शौचालय जो राहु बनवाता है, धन-हानि का कारण बनता है। छाया ग्रह केतु की दिशा भी राहु के समान नैर्ऋत्य कोण ही मानी गई है। दुनियावी भाग-दौड़ करने-करवाने वाला केतु अधिकतर व्यक्ति को घर के बाहर रखता है। अशुभ केतु वाले जातक नाभि से नीचे स्थान द्वारा पीड़ित होते देखे गए हैं। ज्योतिर्विद विद्वानों ने व्यक्ति के जीवन का 48वां वर्ष केतु को दिया गया है। केतु के प्रभाव से मकान में रोशनदान कम होते हैं।

धन लाभ के लिए तुलसी के साथ लगाएं ये 3 पौधें, वास्तु गुरु से जानें पौधे लगाने की सही दिशा

हमारे घर और आसपास लगे पौधे हमे सिर्फ ऑक्सीजन ही नहीं देते हैं बल्कि यह घर की सुंदरता को भी बढ़ाते हैं। लेकिन, क्या आप जानते हैं पौधे में भी ऊर्जा होती है। वह ऊर्जा पौधे को सही दिशा में लगाने से बैलेंस रहती है लेकिन, कई बार पेड़ पौधों की ऊर्जा के कारण व्यक्ति को कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। वास्तु शास्त्र के अनुसार, घर में पौधे लगाते समय कुछ बातों का ख्याल रखना चाहिए। कई बार घर में लगे पेड़ पौधे व्यक्ति की तरक्की में बाधा डालने लगते हैं। वास्तु गुरु मान्या बताती है कि घर में सुख समृद्धि बनाए रखने के लिए बेहद जरूरी है कि आप सही तरीके से उनका चुनाव करें। आइए जानते हैं वास्तु गुरु मान्य के अनुसार, घर में कौन से पौधे लगाने चाहिए और कौनसी पौधे नहीं लगाने चाहिए।

जेड प्लांट : अपने घर में यह पौधा जरूर लगाएं क्योंकि, यह आपको सफलता दिलाने में मदद करता है। यह पौधा सफलता को आकर्षित करता है। हालांकि, इसका लाभ पाने के लिए सही दिशा में जरूर लगाएं। जेड प्लांट को पूर्व दिशा में लगाना लाभकारी माना जाता है। घर में सुख समृद्धि बनाए रखने के लिए

वास्तु गुरु मान्या कहती है कि अपने घर के आंगन में तुलसी का पौधा जरूर लगाना चाहिए। तुलसी का पौधा घर की नेगेटिविटी को कम करता है और घर में सुख समृद्धि को बढ़ाता है। यह पौधा घर में सुख शांति और अच्छी सेहत लाता है। इस पौधा को पूर्व या उत्तर दिशा में लगाना चाहिए।

तुलसी के साथ साथ आप लिली पौधा का पौधा भी लगा सकते हैं। यह घर में तनाव को कम करता है। साथ ही परिवार के सभी लोगों के बीच रिश्तों में मधुरता लेकर आता है। इस पौधे को दक्षिण पूर्व (अग्नि कोण) दिशा में लगा सकते हैं या फिर पूर्व दिशा में लगाएं।

अपने घर में मां लक्ष्मी का वास बनाएं रखने के लिए लगाएं ये पौधे

घर में माता लक्ष्मी का वास बनाए रखने के लिए मनी प्लांट का पौधा जरूर लगाएं। यह पौधा घर में लगाने से माता लक्ष्मी की कृपा हमेशा बनी रहती है। वास्तु गुरु मान्या के अनुसार, दक्षिण पूर्व दिशा में लगा सकते हैं। शमी का पौधे का संबंध शनि से माना गया है इस पौधे को घर में लगाने से शनिदेव की कृपा बनी रहती है। इसे लगाने के लिए सही दिशा अपने घर के मुख्य द्वार के दाहिनी तरफ लगाएं।

भूलकर कर भी घर में न लगाएं ये पौधे

वास्तु गुरु मान्या के अनुसार, घर के अंदर कुछ पौधे बिल्कुल भी नहीं लगाने चाहिए क्योंकि, यह पौधे घर में नकारात्मक ऊर्जा लेकर आते हैं।

घर के अंदर केक्टस का पौधा या कोई भी कांटेदार पौधा नहीं लगाना चाहिए। यह घर में क्लेश और तनाव बढ़ाते हैं।

घर में बोनसाई प्लांट नहीं लगाने चाहिए यह पौधे आपकी तरक्की को रोकते हैं।

जिन पौधे को तोड़ने पर दूध निकलता है ऐसे पौधों को भी घर में नहीं लगाना चाहिए ऐसे पौधे तनाव बढ़ता हैं।

घर की दीवारों में अगर पीपल का पौधा उग जाएं तो यह शुभ नहीं माना जाता है। यह पौधा आर्थिक परेशानियां बढ़ा देता है। इसलिए ध्यान रखें कि पीपल का पौधा घर के बाहर न लगाएं और दीवार में यदि उग जाएं तो उसे तोड़कर गंगा नदी में बहा दें। घर के कभी भी मुरझाए पौधे नहीं लगाकर रखने चाहिए क्योंकि, यह पौधे दुर्भाग्य लाते हैं और माता लक्ष्मी भी ऐसे घर में कभी वास नहीं करती है।

आर्थिक राशिफलः तुला राशि को टीम वर्क से मिलेगा फायदा, देखें कमाई और करियर के मामले में आपके सितारे क्या कहते हैं

मेष राशि आज आप में काम करने का अलग ही जुनून है। चंद्र देव और मंगल देव का आपकी राशि में आना मतलब आपकी ऊर्जा का स्तर बहुत ऊंचा है। ऑफिस में लीडरशिप का मौका मिल सकता है, जिसे आप बखूबी निभाएंगे। बिजनेस में बातचीत के दौरान अपनी वाणी पर काबू रखें। पैसे के मामले में आज का दिन नई प्लानिंग के लिए अच्छा है, बस कोई भी बड़ा फैसला हड़बड़ी में न लें। अपनी बचत पर ध्यान दें।

वृषभ राशि आज का दिन भागदौड़ से ज्यादा प्लानिंग का है। काम चाहे जो भी हो, रिसर्च और तैयारी आपको जीत दिलाएगी। ऑफिस की राजनीति से दूरी बनाना ही आपके हित में है। पैसों के मामले में थोड़ी सतर्कता बरतें, छिपे हुए खर्च सामने आ सकते हैं। निवेश करते समय किसी अनुभवी की राय लेना न भूलें। बड़े संगठनों में काम करने वालों को अपने पुराने संपर्कों से लाभ मिल सकता है।

मिथुन राशि आपकी सबसे बड़ी ताकत आज आपकी बोली है। आज का दिन इंटरव्यू और प्रोफेशनल चर्चाओं के लिए बेस्ट है। आपके आइडियाज को सीनियर और क्लाइंट्स दोनों का साथ मिलेगा। नेटवर्किंग के जरिए पैसे कमाने के नए रास्ते खुलेंगे। करियर में आगे बढ़ना है, तो नए कौशल सीखने पर ध्यान दें। बस कोई भी कागज साइन करने से पहले उसे अच्छे से पढ़ लें।

कर्क राशि शुक्र और गुरु बृहस्पति की युति आपकी आर्थिक स्थिति के लिए बहुत शुभ है, जो लंबी अवधि की सुरक्षा की नींव रखेगी। अगर प्रॉपर्टी या घर से जुड़ी किसी चीज में निवेश करने की सोच रहे हैं, तो आज का दिन सही है। काम में भी आपकी मेहनत और गंभीरता को बॉस जरूर नोटिस करेंगे। अपने अंतर्मन पर भरोसा रखें, क्योंकि आज वो आपको सही राह दिखाएंगे।

सिंह राशि आज का दिन थोड़ा संभलकर चलने वाला है। केतु के प्रभाव के कारण प्राथमिकताओं को लेकर मन में उलझन हो सकती है। फालतू के खर्चों से बचें और अपने बजट को एक बार फिर से देखें। करियर में नयापन अपनाना जरूरी है। ऑफिस में अपनी पहचान बनाने के बजाय टीम के साथ मिलकर काम करने पर ध्यान दें। धैर्य और कूटनीति ही आपको मुश्किलों से बाहर निकाल पाएगी।

कन्या राशि आज दस्तावेजों और कागजी कार्रवाई में सावधानी बरतें। टैक्स या लोन से जुड़े मामले आज आपकी प्राथमिकता में होने चाहिए। काम के दबाव को लेकर परेशान न हों, अपनी सूझ-बूझ से आप हर चुनौती को पार कर लेंगे। विश्लेषण करने की आपकी क्षमता आज आपको दूसरों से आगे रखेगी। काम में आपकी निरंतरता और ईमानदारी ही आपको सम्मान दिलाएगी।

तुला राशि आज का दिन टीम वर्क के लिए बहुत अच्छा है। अकेले काम करने के बजाय अगर लोगों को साथ लेकर चलेंगे, तो नतीजे बेहतर मिलेंगे। बिजनेस में साझेदारी से लाभ के योग बन रहे हैं। बातचीत में अपनी कूटनीति का उपयोग करें, इससे काम की जगह पर रिश्ते मजबूत होंगे। आर्थिक समझौते अगर सोच-समझकर किए जाएं, तो आज का दिन मुनाफा देने वाला हो सकता है।

वृश्चिक राशि आज बजट बनाकर चलना ही समझदारी है। दिन की छोटी-छोटी जरूरतों को पूरा करें और फिजूल के खर्चों पर लगाम लगाएं। काम का दबाव बढ़ सकता है, पर अपनी मेहनत और अनुशासन से आप सब कुछ समय पर पूरा कर लेंगे। शनिदेव का प्रभाव आपसे अनुशासन की मांग कर रहा है। अपनी दिनचर्या पर ध्यान दें, इससे काम में तेजी आएगी और आपकी साख भी बढ़ेगी।

धनु राशि अगर आप शिक्षा, कंसल्टिंग या क्रिएटिव क्षेत्र में हैं, तो आज का दिन आपके नाम है। आप अपने काम और अपनी क्रिएटिविटी से लोगों को प्रभावित कर लेंगे। पैसे के मामले में भावनाओं में बहकर कोई फैसला न लें। करियर में जो भी मौके आएं, उन्हें सीखने का अवसर समझें। आज आपकी सकारात्मक सोच बड़े लोगों का साथ दिलाने में मदद करेगी।

मकर राशि आज परिवार और काम के बीच संतुलन बनाना जरूरी है। अगर रियल एस्टेट या घर से जुड़े काम में पैसा लगा रहे हैं, तो लंबे समय का फायदा देखें। काम में स्थिरता और अनुशासन ही आज आपकी सबसे बड़ी ताकत है। परिवार के साथ चर्चा करने से आपको अपनी प्राथमिकताओं को समझने में मदद मिलेगी। काम में आपकी जिम्मेदारी और ईमानदारी सीनियर को बहुत पसंद आएगी।

कुंभ राशि राहु का प्रभाव आपको कुछ नया और हटकर सोचने के लिए मजबूर कर रहा है। टेक्नोलॉजी या नए माध्यमों से धन कमाने के नए मौके मिल सकते हैं। नेटवर्किंग आज आपके करियर के लिए वरदान साबित होगी। बस कोई भी बड़ा वादा करने से पहले पूरी जानकारी जुटा लें। भविष्य के लक्ष्यों पर ध्यान टिकाए रखें और छोटी-मोटी बाधाओं को नजरअंदाज करें।

मीन राशि शनिदेव की मौजूदगी आपको सिखा रही है कि पैसा कैसे बचाएं और कैसे बढ़ाएं। आज का दिन अपना बजट और बचत की योजनाओं को फिर से जांचने के लिए बहुत बढ़िया है। काम में तरक्की थोड़ी धीमी लग सकती है, पर आप सही दिशा में हैं। अपनी मेहनत को जारी रखें, आपकी लगन ही आपको भविष्य में बड़ी पहचान दिलाएगी। आज कोई भी काम शॉर्टकट से करने की कोशिश न करें।

हथेली के ये 3 निशान बनाते हैं दुर्लभ राजयोग, जीवन में सफलता की ऊंचाई

हस्तरेखा शास्त्र में हाथ की रेखाओं और निशानों का विशेष महत्व बताया गया है। जातक के हाथ पर मौजूद कुछ खास चिन्हों के जरिए उनके भाग्य, सेहत और जीवन में आने वाले बदलावों का आकलन किया जाता है। हाथ में कुछ निशानों को बेहद खास माना जाता है। हथेली पर इनका होना बेहद शुभ और राजयोग देने वाला माना जाता है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि हाथ में ऐसे कौन से निशान होते हैं, जिनके होने से जातक को जीवन में सफलता की ऊंचाइयों तक ले जाते हैं। भाला, धनुष या बाण का निशान होना हस्त रेखा शास्त्र के मुताबिक अगर किसी महिला या पुरुष के हाथ पर बाण, धनुष या भाला का निशान दिखाई दे रहा है। तो ऐसे जातक अपने जीवन में मान-सम्मान और उच्च पद प्राप्त करते हैं। यही लोग आगे जाकर राजनीति में बड़ा मुकाम हासिल करते हैं, सत्ता पर विराजमान होते हैं। इन लोगों में नेतृत्व क्षमता कूट-कूटकर भरी होती है और

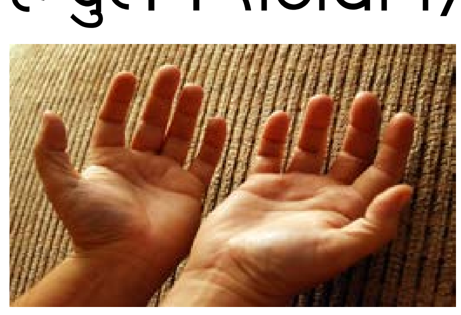

यह लोग निर्णय लेने में भी माहिर होते हैं। अगर किसी जातक के हाथ पर ये तीनों निशान होते हैं, तो इसको एक अत्यंत दुर्लभ राजयोग माना जाता है। हस्तरेखा शास्त्र के मुताबिक ऐसे लोग राजा या रानी के समान सुख-सुविधाएं प्राप्त करते हैं। यह जातक राजनीति में बड़ी सफलता हासिल करते हैं और समाज में अपना प्रभावशाली रुतबा रखते हैं। इनको जीवन में किसी भी चीज की कमी नहीं होती है। हथेली पर राजयोग वाले निशान इसके अलावा हाथ पर ध्वज और चक्र का निशान होना शुभ माना जाता है। अगर किसी व्यक्ति के हाथ में दोनों निशान एक साथ होते हैं, तो जातक को प्रतिष्ठा, अपार धन और मान-सम्मान दिलाता है। ऐसे जातकों को अपने देशवासियों का सम्मान प्राप्त होता है और आगे चलकर यही लोग प्रधानमंत्री और महान शासक बनते हैं। यह लोग अपनी बुद्धिमानी और अच्छे व्यवहार की वजह से प्रसिद्धि पाते हैं।

रोजगार और पानी पर कांग्रेस का प्रहार वेकोलि प्रबंधन के सामने उठी युवाओं और ग्रामीणों की दोहरी पीड़ा

स्थानीय डिप्लोमा व इंजीनियरिंग युवाओं को रोजगार में प्राथमिकता देने की मांग, कोठीबुल्ला के जल संकट पर प्रतिदिन टैंकर और स्थायी टंकियों की उठी मांग

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

क्षेत्र में बढ़ती बेरोजगारी और कोठीबुल्ला गांव में गहराते पेयजल संकट को लेकर गुरुवार को ब्लॉक कांग्रेस कमेटी सारनी का प्रतिनिधिमंडल वेस्टर्न कोलफील्ड लिमिटेड (वेकोलि) पाथाखेड़ा के क्षेत्रीय महाप्रबंधक से मिला। प्रतिनिधिमंडल ने स्थानीय युवाओं को रोजगार में प्राथमिकता देने तथा जल संकट से जूझ रहे ग्रामीणों को तत्काल राहत उपलब्ध कराने की मांग उठाई।

ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष बटेश्वर भारती के नेतृत्व में पहुंचे प्रतिनिधिमंडल ने प्रबंधन को बताया कि वेकोलि की भूमिगत खदानों एवं विभिन्न परियोजनाओं में कार्यरत बाहरी ठेका कंपनियों द्वारा स्थानीय युवाओं की अनदेखी की जा रही है।जबकि क्षेत्र में बड़ी संख्या में माइनिंग डिप्लोमा,इंजीनियरिंग डिग्रीधारी और प्रशिक्षित युवक रोजगार की प्रतीक्षा कर रहे हैं।प्रतिनिधिमंडल ने मांग की कि वेकोलि से जुड़े सभी ठेका कार्यों में स्थानीय मजदूरों,डिप्लोमा धारकों और तकनीकी युवाओं को प्राथमिकता दी जाए,जिससे क्षेत्र में व्याप्त बेरोजगारी कम हो सके और स्थानीय प्रतिभाओं को अवसर मिल सके।प्रतिनिधिमंडल ने कोठीबुल्ला गांव की गंभीर पेयजल समस्या का मुद्दा भी प्रमुखता से उठाया। उन्होंने बताया कि भीषण गर्मी के बीच गांव में जलस्त्रोत सूखने की स्थिति में हैं और ग्रामीणों को पेयजल के लिए प्रतिदिन संघर्ष करना पड़ रहा है। महिलाओं और बुजुर्गों को दूर-दूर से पानी लाना पड़ रहा है,जिससे जनजीवन बुरी तरह प्रभावित हो रहा है।

कांग्रेस नेताओं ने वेकोलि प्रबंधन से मांग की कि कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR) एवं कम्युनिटी डेवलपमेंट मद के अंतर्गत तत्काल प्रभाव से प्रतिदिन दो पेयजल टैंकर गांव में भेजे जाएं तथा दो स्थायी पानी की टंकियां स्थापित की जाएं,ताकि ग्रामीणों को नियमित और सुगम जल उपलब्ध हो सके।

ब्लॉक अध्यक्ष बटेश्वर भारती ने कहा कि जिस क्षेत्र की धरती से कोयला निकालकर देश की ऊर्जा जरूरतें पूरी की जा रही हैं,उसी क्षेत्र के युवाओं का बेरोजगार रहना और गांवों का पानी के लिए तरसना चिंताजनक है। उन्होंने कहा कि तवा-3 गांधीग्राम परियोजना सहित वेकोलि की विभिन्न गतिविधियां क्षेत्र में संचालित हैं,इसलिए आसपास के गांवों को रोजगार और मूलभूत सुविधाओं का प्रत्यक्ष लाभ मिलना चाहिए।उन्होंने वेकोलि प्रबंधन से दोनों मुद्दों पर संवेदनशीलता दिखाते हुए शीघ्र सकारात्मक कार्रवाई करने की मांग की। प्रतिनिधिमंडल में वरिष्ठ कांग्रेस नेता तिरुपति ऐरोलू, भूषण कांति,एस.के.उपरित, मंडलम अध्यक्ष हेमंत धोटे, रामाश्रय वर्मा,वसीम खान,रोहित भारती एवं अरविंद सिंह सहित अन्य कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

जंगल में मिला अज्ञात शव, पहचान होने के बाद पुलिस ने किया अंतिम संस्कार

गायत्री स्टाफ के सामने वन क्षेत्र में मिला था शव,मृतक की पहचान सुभाष के रूप में हुई परिजन और स्थायी पता नहीं मिलने पर पुलिस बनी सहारा

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

गायत्री स्टाफ के सामने स्थित जंगल में गुरुवार सुबह एक व्यक्ति का शव मिलने से क्षेत्र में सनसनी फैल गई।सूचना मिलते ही पाथाखेड़ा पुलिस मौके पर पहुंची और शव का पंचनामा बनाकर जांच शुरू की। प्रारंभिक जांच में पुलिस ने अनुमान लगाया कि शव लगभग दो दिन पुराना हो सकता है।मौके पर मौजूद लोगों के अनुसार मृतक क्षेत्र में रेत उठाने के कार्य से जुड़ा हो सकता है।शव की स्थिति को देखते हुए उसकी आयु लगभग 40 से 45 वर्ष के बीच आंकी गई थी।घटना की जानकारी मिलने के बाद पुलिस के साथ वन विभाग का अमला भी घटनास्थल पर पहुंचा और आवश्यक निरीक्षण किया।जांच के दौरान पुलिस ने मृतक की पहचान सुभाष के रूप में की।हालांकि उसके परिजनों, स्थायी निवास अथवा किसी प्रकार के पारिवारिक संपर्क की जानकारी नहीं मिल सकी।काफी प्रयासों के बाद कोई दावेदार सामने नहीं आने पर पाथाखेड़ा पुलिस ने मानवीय संवेदनशीलता का परिचय देते हुए मृतक के शव का अंतिम संस्कार (मिट्टी देना) कराया।पुलिस अधिकारियों का कहना है कि प्रथम दृष्टया मामला हत्या का प्रतीत नहीं होता,फिर भी हर संभावित पहलू को ध्यान में रखते हुए जांच की जा रही है।पुलिस यह भी पता लगाने का प्रयास कर रही है कि मृतक किन परिस्थितियों में जंगल क्षेत्र तक पहुंचा और उसकी मौत कैसे हुई।स्थानीय लोगों ने भी पुलिस द्वारा बेसहारा मृतक के अंतिम संस्कार की पहल को मानवीय दायित्व का उदाहरण बताया है। फिलहाल पुलिस मामले की जांच जारी रखे हुए है।

नल टपक रहे,शिकायतें बह रही सारनी में प्लंबरों का संकट बना जनचर्चा का विषय

बेरोजगार युवा काम की तलाश में,नागरिक भरोसेमंद प्लंबर की खोज में व्यवस्था और कौशल विकास पर उठे सवाल

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

नगर पालिका परिषद सारनी और आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों को मिलाकर लगभग 60 हजार से अधिक मतदाताओं वाले इस बड़े नगर में इन दिनों एक अनोखी लेकिन गंभीर समस्या चर्चा का विषय बनी हुई है।शहर में पानी की पाइप लाइन,नल कनेक्शन, मोटर और घरेलू प्लंबिंग से जुड़े कार्यों के लिए भरोसेमंद प्लंबरों की भारी कमी महसूस की जा रही है। स्थिति यह है कि कई नागरिकों को छोटी-छोटी मरम्मत के लिए भी कई दिनों तक इंतजार करना पड़ रहा है।स्थानीय लोगों का कहना है कि शहर में कुछ प्लंबर उपलब्ध तो हैं,लेकिन उनके व्यवहार,कार्यशैली और लेन-देन को लेकर अक्सर शिकायतें सामने आती रहती हैं।कई हितग्राही बताते हैं कि तय समय पर काम न होना, मनमाने शुल्क और गुणवत्ता को लेकर असंतोष के कारण वे ऐसे लोगों को दोबारा बुलाना पसंद नहीं करते। दूसरी ओर,चुनिंदा ठेकेदारों से जुड़े प्लंबर अधिकांश समय उन्हीं के कार्यों में व्यस्त रहते हैं,जिससे आम नागरिकों की परेशानी और बढ़ जाती है।विडंबना यह है कि शहर में बड़ी संख्या में युवा रोजगार की तलाश में हैं, जबकि प्लंबिंग जैसे तकनीकी क्षेत्रों में प्रशिक्षित और कुशल कार्यकर्ताओं की कमी बनी हुई है।यह स्थिति स्थानीय रोजगार व्यवस्था और कौशल विकास योजनाओं की प्रभावशीलता पर भी सवाल खड़े करती है। सामाजिक संगठनों और नागरिकों का मानना है कि नगर पालिका,औद्योगिक संस्थानों और कौशल विकास केंद्रों के सहयोग से प्लंबिंग, इलेक्ट्रिकल एवं अन्य तकनीकी कार्यों का प्रशिक्षण अभियान चलाया जाना चाहिए।इससे एक ओर युवाओं को रोजगार मिलेगा, वहीं दूसरी ओर नागरिकों को भरोसेमंद और गुणवत्तापूर्ण सेवाएं उपलब्ध हो सकेंगी। फिलहाल,सारनी में काम है लेकिन कारीगर नहीं,और युवा हैं लेकिन प्रशिक्षण नहीं जैसी स्थिति बहस और चिंता का विषय बनी हुई है।

जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ घर-घर तक पहुंचाने विशेष अभियान शुरू

12 से 18 जून तक विभिन्न वार्डों में लगेंगे शिविर, पात्र हितग्राहियों को मिलेगी योजनाओं की जानकारी और त्वरित लाभ

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

मध्यप्रदेश शासन के निर्देशानुसार विश्व पर्यावरण दिवस और अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के मध्य जनकल्याणकारी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन एवं अधिकाधिक हितग्राहियों तक लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से नगर निकाय स्तर पर 12 जून से 18 जून तक विशेष जनकल्याणकारी अभियान चलाया जाएगा।अभियान के तहत नगर पालिका परिषद सारनी द्वारा विभिन्न स्थानों पर शिविर आयोजित किए जाएंगे,जहां नागरिकों को शासन की विभिन्न योजनाओं की जानकारी देने के साथ- साथ पात्र हितग्राहियों को लाभान्वित करने की प्रक्रिया भी संपादित की जाएगी।

नगर पालिका परिषद सारनी के अनुसार 12 जून को वार्ड क्रमांक 1 से 13 तक के नागरिकों के लिए शिवाजी प्रांगण,सारनी में विशेष शिविर आयोजित किया जाएगा। इसी प्रकार 15 जून को वार्ड 14 से 29 के रहवासियों के लिए फुटबॉल ग्राउंड,पाथाखेड़ा में शिविर लगाया जाएगा।वहीं वार्ड 30 से 36 के नागरिकों के लिए जैरी चौक,शोभापुर में विशेष शिविर का आयोजन किया जाएगा।शिविरों में विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं से संबंधित आवेदन,पात्रता जांच,दस्तावेज सत्यापन, शिकायतों के निराकरण तथा हितग्राहियों को आवश्यक मार्गदर्शन की व्यवस्था रहेगी। नगर पालिका प्रशासन ने नागरिकों से अपील की है कि वे अपने आवश्यक दस्तावेजों के साथ शिविरों में पहुंचकर शासन की योजनाओं का अधिकतम लाभ प्राप्त करें।

मुख्य नगर पालिका अधिकारी ने कहा कि शासन की मंशा है कि कोई भी पात्र व्यक्ति योजनाओं के लाभ से वंचित न रहे।इसी उद्देश्य से यह विशेष अभियान संचालित किया जा रहा है, जिसमें आमजन की सक्रिय सहभागिता अपेक्षित है।

पाथारवेड़ा में गूंजी सिद्धू मूसे वाला की यादें, 33वीं जयंती पर संगीत प्रेमियों ने बांटा शरबत

`295´ और `द लास्ट राइड´ के सुरों के बीच युवाओं ने दी श्रद्धांजलि, बस स्टॉप पर राहगीरों का किया स्वागत

दैनिक कारखाने का सफर। पाथाखेड़ा

कोयलांचल क्षेत्र पाथाखेड़ा के बस स्टॉप पर गुरुवार को मशहूर पंजाबी गायक,गीतकार और रैपर सिद्धू मूसे वाला (शुभदीप सिंह सिद्धू) की 33 वीं जयंती उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाई गई। क्षेत्र के संगीत प्रेमियों एवं युवाओं ने एकत्रित होकर उनके व्यक्तित्व और संगीत यात्रा को याद करते हुए विशेष कार्यक्रम आयोजित किया।

कार्यक्रम के आयोजक सूरज एवं मयूर ने जानकारी देते हुए बताया कि सिद्धू मूसे वाला का जन्म 11 जून 1993 को पंजाब के मानसा जिले के मूसा गांव में हुआ था। उन्होंने अपनी अनूठी गायकी,दमदार लेखनी और बेबाक अंदाज से देश-विदेश में करोड़ों युवाओं के दिलों में खास पहचान बनाई।आज भी उनके गीत युवाओं की जुबान पर हैं और नई पीढ़ी को प्रेरित करते हैं।जन्मजयंती कार्यक्रम के दौरान सिद्धू मूसे वाला के लोकप्रिय गीत '295' और 'द लास्ट राइड' सहित कई चर्चित रचनाओं को सुनाकर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। उपस्थित युवाओं ने कहा कि सिद्धू केवल एक गायक नहीं, बल्कि संघर्ष,आत्मविश्वास और अपनी पहचान बनाने की मिसाल थे।इस अवसर पर पाथाखेड़ा बस स्टॉप से आवागमन करने वाले यात्रियों और राहगीरों को शरबत वितरित किया गया। भीषण गर्मी के बीच आयोजित इस सेवा कार्य को लोगों ने सराहा और सिद्धू मूसे वाला की स्मृति में किए गए इस आयोजन की प्रशंसा की।कार्यक्रम में मौजूद युवाओं ने कहा कि सिद्धू मूसे वाला भले ही आज हमारे बीच नहीं हैं,लेकिन उनके गीत,विचार और संघर्ष की कहानी हमेशा लोगों के दिलों में जीवित रहेगी। श्रद्धांजलि सभा का समापन उनके चित्र पर पुष्प अर्पित कर एवं दो मिनट का मौन रखकर किया गया। इस अवसर पर मुख्य रूप से रॉकी भाई,आकाश तरुण रत्ती,भोलू रत्ती,धामन शाहिद बड़ी संख्या में युवा कार्यक्रम स्थल पर उपस्थित रहे।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक मधुवर मोहन द्विवेदी द्वारा इंडिपेंडेट प्रेस, 11 प्रेस काम्पलेक्स, एमपी नगर जोन-1 भोपाल 462023 म.प्र. से मुद्रित एवं 201 ब्लाक ई, सागर प्रीमियम टावर जेके हॉस्पिटल, कोलार रोड, भोपाल म.प्र. से प्रकाशित। (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल न्यायालय रहेगा) संपादक- सुनील यादव, समाचार संपादक- राहुल कौशिक। फोन नं. 0755-4262585-9425006706, मो. नंबर 9826697203, 9926288166, RNI.No. MPHIN/2020/78949